



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 76]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 5, 2018/फाल्गुन 14, 1939

No. 76]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 5, 2018/PHALGUNA 14, 1939

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 मार्च, 2018

(अंतिम जांच परिणाम)

मामला सं. ओआई 17/2017

विषय: चीन जन गण के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड" के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

फा. सं. 14/47/2016-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे यहां आगे अधिनियम भी कहा गया है) तथा उसकी सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, मूल्यांकन तथा संग्रहण और क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे आगे यहां नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए जबकि मैसर्स संध्या डाइज एंड केमिकल्स प्रा. लि. (जिसे आगे यहां आवेदक/घरेलू उद्योग कहा गया है) ने चीन जन गण (जिसे आगे यहां संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड (जिसे आगे यहां संबद्ध सामान अथवा P_2O_5 कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाते हुए अधिनियम तथा नियमावली के अनुसार, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे यहां प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन पत्र दायर किया था और संबद्ध सामानों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए जांच की शुरुआत किए जाने का अनुरोध किया था।

- और जबकि प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत पाटन, क्षति और कारणात्मक संपर्क के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर तथाकथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव निर्धारित करने तथा पाटनरोधी शुल्क की राशि, जो यदि लगाया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, की सिफारिश करने के लिए संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित, नियमावली के नियम 6(1) के अनुसार 17 मार्च, 2017 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की।

क. प्रक्रिया

3. नीचे वर्णित प्रक्रिया इस जांच के संबंध में अपनाई गई है:

- i. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग से पाटनरोधी जांच शुरू किए जाने के लिए आवेदन पत्र की प्राप्ति के संबंध में भारत में संबद्ध देश के दूतावास को अधिसूचित किया।
- ii. प्राधिकारी ने संबद्ध सामानों के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित 17 मार्च, 2017 की अधिसूचना जारी की।
- iii. नई दिल्ली में स्थित संबद्ध देश के दूतावास को भी नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के संबंध में सूचित किया गया था।
- iv. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, भारत में ज्ञात आयातकों और उनके पास उपलब्ध सूचना के अनुसार अन्य हितबद्ध पक्षकारों को तथा घरेलू उद्योग को जांच की शुरुआत से संबंधित अधिसूचना की प्रति भेजी। इस जांच के पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे प्रश्नावली के उत्तर दायर करें और पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत की अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने ज्ञात विचार दें।
- v. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार, भारत में संबद्ध देश के दूतावास को तथा ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, ज्ञात आयातकों को आवेदन के अगोपनीय रूपांतर की प्रति उपलब्ध कराई।
- vi. प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, संबद्ध देश में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, जिनके ब्यौरे आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए थे, को संगत सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावली भेजी:
 - क. असंबली केमिकल्स कंपनी लि.
 - ख. चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल कं. लि.
 - ग. विंटरसन कलर कं. लि.
 - घ. स्काईफलाई इंडस्ट्री लिमिटेड
 - ङ. हाई होप इंटरनेशनल ग्रुप
 - च. चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि.
 - छ. झेजियांग मेडिसिन्स एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.
 - ज. किंगदाओ विस्डम इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं. लि.
 - झ. झेजियांग सा-केम इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं.
 - ञ. अवई केमिकल्स कं. लि.
- vii. भारत में संबद्ध देश के दूतावास से यह भी अनुरोध किया गया था कि वे संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें कि वे निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर दें। उत्पादकों/निर्यातकों को भेजे गए पत्र एवं प्रश्नावली की प्रति चीन के दूतावास को संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के नाम एवं पतों के साथ भी भेजी गई थी।
- viii. संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों का निर्यात करने वाले निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए:
 - क. चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल कं. लि.
 - ख. चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि.
- ix. चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल कं. लि. ने जांच की शुरुआत के संबंध में अनुरोध किए हैं।
- x. चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. ने सूचित किया है कि 01 अगस्त, 2017 से कंपनी का नाम बदल गया है। उसके बाद इसे "अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि." कहा जाना होता है। उन्होंने औपचारिक रूप से नाम में परिवर्तन का साक्ष्य देते हुए समर्थन में दस्तावेज प्रस्तुत किए। प्राधिकारी ने चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. के नाम में परिवर्तन को स्वीकार कर लिया है और उपर्युक्त निर्यातक को इस अंतिम जांच परिणाम में "अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि." कहा जा रहा है।
- xi. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध सामानों के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं/प्रयोक्ता एसोसिएशनों, जिनके नाम और पते प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए थे, को जांच की शुरुआत की अधिसूचना की प्रति भेजी और उन्हें सलाह दी कि वे नियम 6(4) के अनुसार प्राधिकारी द्वारा निर्धारित समय-सीमा के अंतर्गत लिखित में अपने ज्ञात विचार दें।

- क. सुदर्शन केमिकल इंडस्ट्रीज लि.
 ख. हियुवाच कलर प्रा. लि.
 ग. पिडिलाइट इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 घ. प्रसोल केमिकल्स लिमिटेड
 ङ. लोना इंडस्ट्रीज लिमिटेड
 च. यूपीएल लि.
 छ. अंशिका पॉलीसर्फ
- xii. संबद्ध सामानों के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने आयातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए:
- क. मेघामणि एलएलपी
 ख. प्रसोल केमिकल्स लि.
 ग. सुदर्शन केमिकल इंडस्ट्रीज लि.
- xiii. प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुली रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपान्तर उपलब्ध कराया। सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को वर्तमान प्रकटन विवरण में ध्यान में रखा गया है।
- xiv. वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए जांच की अवधि जुलाई, 2015 - सितंबर, 2016 (15 माह) मानी गई है। क्षति की जांच की अवधि अप्रैल, 2013 - मार्च, 2014, अप्रैल, 2014 - मार्च, 2015, अप्रैल, 2015 - मार्च, 2016 और जांच की अवधि मानी गई है। इसके अतिरिक्त, चूंकि जांच की अवधि 15 माह की अवधि है, अतः जांच की अवधि के लिए सभी आंकड़ों को उसी रूप में वार्षिक आधार पर माना गया है। चूंकि जांच की अवधि 12 माह से अधिक है, अतः जांच की अवधि से संबंधित आंकड़े अन्य वर्षों से तुलना करने के लिए "वार्षिकीकृत" आधार पर दर्शाए गए हैं।
- xv. आवेदक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों से आवश्यक समझी गई सीमा तक अतिरिक्त/पूरक सूचना मांगी गई थी। घरेलू उद्योग तथा निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा दिए गए आंकड़ों का सत्यापन जांच के प्रयोजन के लिए आवश्यक मानी गई सीमा तक किया गया था। आवश्यक संशोधन के साथ उस सत्यापित सूचना पर ही विश्वास किया गया है।
- xvi. क्षति रहित कीमत (एनआईपी) घरेलू उद्योग द्वारा सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के आधार पर प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और उसे निर्मित करने तथा उसकी बिक्री करने की लागत पर आधारित है। इसे यह सुनिश्चित करने के लिए तैयार किया गया है कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- xvii. पिछले तीन वर्षों के लिए लेन-देन वार आधार पर वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) द्वारा दी गई सूचना तथा जांच की अवधि भारत में संबंधित उत्पाद की आयात की मात्रा और मूल्य के निर्धारण के लिए अपनाई गई है।
- xviii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को 17 जनवरी, 2018 को आयोजित मौखिक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए अवसर भी प्रदान किए। उन सभी हितबद्ध पक्षकारों, जिन्होंने सुनवाई के समय मौखिक रूप से अपने विचार दिए थे, को यह सलाह दी गई कि वे मौखिक रूप से व्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप में दायर करें। हितबद्ध पक्षकारों को विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों का प्रत्युत्तर अनुरोध देने का भी अवसर प्रदान किया गया था। इस जांच की अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध, जहां भी संगत पाए गए, प्राधिकारी द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम में हल किए गए।
- xix. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, जहां भी आवश्यक हुआ गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया है कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध करायें।
- xx. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्ष ने न तो प्राधिकारी को उत्तर दिया है और न ही वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना प्रस्तुत की है या जांच में काफी बाधा डाली है, उन्हें प्राधिकारी द्वारा असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर उनके विचार रिकार्ड किए गए हैं।

- xxi. घरेलू उद्योग का सत्यापन वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए आवश्यक समझी गई सीमा तक किया गया।
- xxii. दिनांक 24 से 29 जुलाई, 2017 के बीच निर्यातकों के परिसरों में स्थल सत्यापन भी किया गया था।
- xxiii. एक प्रकटन विवरण 19.02.2018 को जारी किया गया था जिसमें निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन अनिवार्य तथ्य थे, और जिसमें 26.02.2018 का समय प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां, यदि कोई हों, देने के लिए दिया गया था। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटन के बाद की टिप्पणियां पर समुचित रूप से विचार किया है।
- xxiv. इस जांच परिणाम में *** किसी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा मानी गई सूचना का द्योतक है।
- xxv. प्राधिकारी द्वारा औसत विनिमय दर जांच की अवधि के दौरान विद्यमान 1 अमेरिकी डॉलर = 67.06 रुपए अपनाई गई है।

ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

- 4. वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए विचाराधीन उत्पाद "फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड" अथवा " P_2O_5 " है।

ख.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

- 5. घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
 - i. विचाराधीन उत्पाद फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड है। P_2O_5 को डाई फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड, फॉस्फोरस (V) ऑक्साइड, फॉस्फोरिक एनिहाइड्राइड, टेट्रा फॉस्फोरस डेकाऑक्साइड, टेट्रा फॉस्फोरस डेकाऑक्साइड के रूप में भी जाना जाता है।
 - ii. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड सफेद माइक्रो क्रिस्टलीन, हल्का चूर्ण होता है जो ऑक्सीजन की अत्यधिक मात्रा में एलीमेंटल फॉस्फोरस के मिश्रण द्वारा उत्पादित किया जाता है।
 - iii. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड एक पावरफुल डेसीकेंट और डिहाइड्रेटिंग एजेंट के रूप में प्रयुक्त किया जाता है और रसायन उद्योग में एक उपयोगी बिल्टिंग ब्लॉक तथा रि-एजेंट होता है।
 - iv. विचाराधीन उत्पाद उप शीर्ष 28091000 के तहत सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 28 के तहत वर्गीकृत है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और उत्पाद क्षेत्र पर किसी भी तरह बाध्यकारी नहीं है।
 - v. अन्य पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों के संबंध में याचिकाकर्ता ने यह तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता के पास उत्पादन, परिवर्तन का अनुपात, डिजाइन, संघटता और पर्यावरणीय अनुकूल तथा कम कार्बन फुट प्रिंट टैक्नोलॉजी के संदर्भ में नवीनतम और बेहतर प्रौद्योगिकी है क्योंकि वे द्रव ऑक्सीजन का प्रयोग करते हैं न कि वायु का।
 - vi. याचिकाकर्ता टैंकों में द्रव ऑक्सीजन खरीदते हैं न कि सिलेंडरों में। वायु से ऑक्सीजन निकालने में उसकी अपनी पूंजी और संचालन लागत लगेगी जो स्पष्ट रूप से टैंकों में द्रव ऑक्सीजन खरीदने में बचती है।
 - vii. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के उत्पादन में कई चरण, ठोस पीले फॉस्फोरस को द्रव पीले फॉस्फोरस में पिघलाना, द्रव पीले फॉस्फोरस को बंद वातावरण में वायु प्रदूषण के बिना रिएक्टर में स्थानांतरित करना तथा रिएक्टर में ऑक्सीजन के साथ पीले फॉस्फोरस की अभिक्रिया करना, फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड वाष्प का संकेंद्रण करना और फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड चूर्ण को एकत्रित करना तथा नमी प्रदूषण के बिना उसकी पैकिंग करना शामिल होते हैं।
 - viii. यद्यपि पीले फॉस्फोरस (वाईपी) से फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड में उत्पादन प्रक्रिया में ऑक्सीजन की मौजूदगी में पीले फॉस्फोरस को जलाना ही शामिल नहीं होता, सुरक्षित तरीके से और बंद वातावरण में पीले फॉस्फोरस की सार संभाल एक बड़ी चुनौती और खतरनाक है क्योंकि पीला फॉस्फोरस अत्यधिक ज्वलनशील, खतरनाक और विस्फोटक होता है।
 - ix. इसके अतिरिक्त, P_2O_5 अत्यधिक क्षरणीय, प्रतिक्रिया कारक रसायन और एक विस्फोट के खतरे वाला भी होता है। इसके लिए विस्फोट – सह विद्युत उपकरणों और फिटिंग एवं विशेष रूप से प्रशिक्षित कार्मिकों की आवश्यकता होती है ताकि वे P_2O_5 का उत्पादन और भंडारण संभाल कर सकें।
 - x. P_2O_5 के विनिर्माण के लिए विशेषज्ञ कार्मिकों की आवश्यकता होती है। विशेषकर, कुशल कार्मिकों की आवश्यकता होती है जो उत्पादन के खतरनाक स्वरूप की सार संभाल कर सकें। 30 प्रतिशत तक महत्वपूर्ण मूल्यवर्द्धन पीले फॉस्फोरस को P_2O_5 में बदलने के लिए प्राप्त किया जाता है।
 - xi. प्राधिकारी ने कई रसायन एवं पैट्रो रसायन उत्पादों के मामले में पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की है जिनमें भारत में किया गया मूल्यवर्द्धन या तो तुलनीय है या घरेलू उद्योग द्वारा किए जा रहे मूल्यवर्द्धन से काफी कम है।

ख.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

- 6. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं:

- i. P_2O_5 के उत्पादन के लिए ऑक्सीकरण अभिक्रिया के बहुत ही आधारभूत क्रियाकलाप की आवश्यकता होती है। परिवर्तन में 30 प्रतिशत मूल्यवर्द्धन, जिसका दावा किया गया है, खर्चीले द्रव ऑक्सीजन, पुरानी प्रौद्योगिकी और अत्यधिक पैकिंग लागत के कारण अधिक विनिर्माण लागत के निमित्त हो सकता है।
- ii. चीन उन्नत प्रौद्योगिकी से विनिर्माण कर रहा है, जहां वे हवा से ऑक्सीजन निकालते हैं जबकि संध्या डाइज एंड केमिकल्स प्रा. लि. सिलेंडरों में द्रव ऑक्सीजन खरीदने की बहुत ही पुरानी पद्धति का प्रयोग कर रहा है।
- iii. कार्मिकों के कौशल का प्रयोग रसायन उद्योग में मूलभूत परिपाटियों में एक बहुत ही सामान्य परिपाटी है।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

7. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद "फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड" है जिसे P_2O_5 भी कहा जाता है। P_2O_5 को डाई फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड, फॉस्फोरस (V) ऑक्साइड, फॉस्फोरिक एनिहाइड्राइड, टेट्रा फॉस्फोरस डेकाऑक्साइड, टेट्रा फॉस्फोरस डेकाऑक्साइड के रूप में भी जाना जाता है।
8. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड सफेद माइक्रो क्रिस्टलीन, हल्का चूर्ण होता है जो ऑक्सीजन की अत्यधिक मात्रा में एलीमेंटल फॉस्फोरस के मिश्रण द्वारा उत्पादित किया जाता है। फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड ऑर्थो फॉस्फोरिक एसिड, H_3PO_4 का एनहाइड्रो होता है। यह बहुत ही हाइड्रोस्कोपिक होता है और पानी के द्वारा मध्यवर्तियों के माध्यम से H_3PO_4 में परिवर्तित किया जाता है।
9. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड एक पावरफुल डेसीकेंट और डिहाइड्रेटिंग एजेंट के रूप में प्रयुक्त किया जाता है और रसायन उद्योग में एक उपयोगी बिल्टिंग ब्लॉक तथा रि-एजेंट होता है। उसके प्रबल हाइड्रोस्कोपिक गुणधर्मों के कारण फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का प्रयोग एक ड्राइंग एजेंट के रूप में किया जा सकता है। फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का अनुप्रयोग ऑर्गेनिक सिंथेसिस और पॉलीमराइजेशन अभिक्रियाओं में संकेंद्रण के लिए; मोनो/डाई ईस्टर की मात्रा के साथ फॉस्फेट ईस्टर्स के उत्पादन के लिए; विशेषज्ञता वाले सोडियम और अमोनियम फॉस्फेट के विनिर्माण के लिए सुपर फॉस्फोरिक एवं पॉली फॉस्फोरिक एसिड तथा ग्लास मेकिंग के लिए एक रि-एजेंट के रूप में होता है।
10. विचाराधीन उत्पाद सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 28 के तहत वर्गीकृत है। विचाराधीन उत्पाद का सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 के अंतर्गत विशिष्ट एचएस कोड 28091000 है। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और उत्पाद क्षेत्र पर किसी भी तरह बाध्यकारी नहीं है।
11. अन्य हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि 30 प्रतिशत मूल्यवर्द्धन खर्चीले द्रव ऑक्सीजन, पुरानी प्रौद्योगिकी और अत्यधिक पैकिंग लागत के कारण अधिक विनिर्माण लागत के निमित्त हो सकता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का उत्पादन खतरे वाला होता है क्योंकि पीला फॉस्फोरस अत्यधिक ज्वलनशील, खतरनाक और विस्फोटक होता है। इसके अतिरिक्त, P_2O_5 अत्यधिक क्षरणीय, प्रतिक्रिया कारक रसायन भी होता है जिसके लिए विस्फोट – सह विद्युत उपस्करों और फिटिंग एवं प्रशिक्षित कार्मिकों की आवश्यकता होती है ताकि वे P_2O_5 का उत्पादन और भंडारण संभाल कर सकें। प्राधिकारी याचिकाकर्ताओं को इस तर्क को भी नोट करते हैं कि P_2O_5 के विनिर्माण के लिए विशेषज्ञ कार्मिकों, विशेष रूप से उत्पादन के खतरनाक स्वरूप की सार संभाल करने के लिए विशेष कुशल कार्मिकों की आवश्यकता होती है और 30 प्रतिशत तक काफी मूल्यवर्द्धन पीले फॉस्फोरस पर अपेक्षित होता है।
12. चीनी उत्पादकों और घरेलू उद्योग द्वारा ऑक्सीजन की खरीद की विधि के संबंध में, यह नोट किया गया है कि ऑक्सीजन हवा से निकाला जाता है या तरल ऑक्सीजन के रूप में खरीदा जाता है, दोनों की अपनी लागत होती है। तरल ऑक्सीजन और हवा से निकाले गए ऑक्सीजन के कारण लागत में अंतर इतना ज्यादा नहीं है कि अंतिम उत्पाद की कुल लागत में कोई बड़ा अंतर पैदा हो।
13. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी मानते हैं कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामानों में और संबद्ध देश से भारत में आयातित संबद्ध सामानों में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामान और भारत में आयातित संबद्ध सामान भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, प्रकार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विशिष्टियों, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा सामानों के प्रशुल्क वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय है। वे तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता घरेलू रूप से विनिर्मित P_2O_5 और आयातित P_2O_5 का प्रयोग परस्पर परिवर्तनीय रूप से कर रहे हैं। प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद नियमावली के नियम 2(घ) के अभिप्राय से संबद्ध देश से आयातित उत्पाद की समान वस्तु है।

ग. घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार

14. यह याचिका मैसर्स संध्या डाइज एंड केमिकल्स प्रा. लि. द्वारा दायर की गई है जो भारत में विचाराधीन उत्पाद का घरेलू उत्पादक है।

ग.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

15. यह याचिका विचाराधीन उत्पाद के एक घरेलू उत्पादक के रूप में मैसर्स संध्या डाइज एंड केमिकल्स प्रा. लि., मुंबई द्वारा दायर की गई है। भारत में P_2O_5 के कुछ अन्य ज्ञात उत्पादक हैं।
16. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि भारत में याचिकाकर्ता को छोड़कर फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का अन्य मौजूदा ज्ञात उत्पादक नहीं है। दो अन्य उत्पादक थे, यथा यूनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड और पंजाब केमिकल एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि., जिन्हें संयंत्र को बंद करने के लिए मजबूर किया गया था। यद्यपि, संबद्ध देश से पाटित आयातित उत्पाद की कम कीमतों से प्रतिस्पर्द्धा में बने रहने में अपनी अर्थक्षमता के कारण यूनाइटेड फॉस्फोरस लि. ने अपना संयंत्र 1990 के दशक में बंद कर दिया था; पंजाब केमिकल एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. ने अपना संयंत्र 2013 में बंद कर दिया था। इसके अतिरिक्त, मैसर्स प्रसोल केमिकल्स लि. में फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का उत्पादन करने की क्षमता थी, फिर भी वह कंपनी अब अधिकतर संबद्ध सामानों का आयात कर रही है।
17. याचिकाकर्ता ने ग्राहकों को की गई अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए जांच की अवधि में संबद्ध देश से संबद्ध सामानों की बहुत कम मात्राओं का आयात किया है। कुल आयातों, खपत और उत्पादन की तुलना में याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए आयात अधिक नहीं हैं।
18. याचिकाकर्ता जांच की अवधि में भारत में संबद्ध सामानों का एक मात्र उत्पादक है। याचिकाकर्ता आधार की आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा पाटनरोधी नियमावली के अभिप्राय से घरेलू उद्योग है।

ग.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

19. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता की भारत में संबद्ध सामानों का एक मात्र उत्पादक नहीं है। उन्होंने तर्क दिया है कि अन्य भारतीय कंपनियां भी हैं, यथा - पंजाब केमिकल एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लि. तथा यूनाइटेड फॉस्फोरस लि., जो इन कंपनियों की वेबसाइट की सूचना के अनुसार इस उत्पाद का उत्पादन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, पीसीपीएल ने उत्पादन बंद कर दिया है क्योंकि पीसीपीएल की प्रौद्योगिकी अप्रयोज्य है तथा उन्हें दक्षिण अमेरिका में निवेशों पर हानियां हुई हैं।
20. याचिकाकर्ता ने संबद्ध देश से संबद्ध सामानों का आयात किया है। नियम 2(ख) के अनुसार याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग नहीं माना जाना चाहिए।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

21. वर्तमान आवेदन पत्र मैसर्स संध्या डाइज एंड केमिकल्स प्रा. लि. द्वारा दायर किया गया था जो भारत में विचाराधीन उत्पाद का घरेलू उत्पादक है और संबद्ध देश से फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की मांग कर रहा है।
22. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार और की गई जांच के अनुसार, याचिकाकर्ता के अलावा विचाराधीन उत्पाद के निम्नलिखित अन्य ज्ञात उत्पादक हैं, यथा:
 - a. यूनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड
 - b. पंजाब केमिकल एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड
23. जांच के दौरान पंजाब केमिकल एंड क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड ने याचिकाकर्ता को समर्थन देते हुए यह उल्लेख किया कि उन्होंने पाटन के कारण संबद्ध सामानों का उत्पादन बंद किया। तथापि, यूनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड ने वर्तमान जांच में कोई रूचि नहीं दिखाई है। इसके अतिरिक्त, रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना यह दर्शाती है कि मैसर्स प्रसोल केमिकल लि. नियमित रूप से संबद्ध सामानों का आयात कर रहा है और जांच के एक हितबद्ध पक्षकार के रूप में उन्होंने आयातक प्रश्रावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त, पीसीपीएल की प्रौद्योगिकी और निवेश में हानियों के मुद्दे के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि पीसीपीएल की प्रौद्योगिकी संगत नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग संध्या डाइज एंड केमिकल्स प्रा. लि. है।
24. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि याचिकाकर्ता ने संबद्ध सामानों का आयात किया है तथा घरेलू उद्योग के रूप में माने जाने के लिए पात्र नहीं है, यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने ग्राहकों को की गई प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए जांच की अवधि में संबद्ध देश से संबद्ध सामानों की बहुत कम मात्रा का आयात किया है क्योंकि उत्पादन में अस्थायी कमी आ गई थी। यह देखा जाता है कि याचिकाकर्ता द्वारा किए गए आयात जांच की अवधि में कुल आयात का 1 प्रतिशत हैं जो भारत में खपत का 1 प्रतिशत से कम है और जांच की अवधि में देश में उत्पादन का लगभग 2 प्रतिशत है। याचिकाकर्ता संबद्ध सामानों का प्रमुख रूप से उत्पादक है और उसका ध्यान निरंतर घरेलू उत्पादन पर रहता है। याचिकाकर्ता ने 6 माह की अवधि के भीतर अपनी काफी क्षमता बढ़ाने के अपने दावे के समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य दिए हैं। मामले के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अभिप्राय से पात्र घरेलू उद्योग है और नियम 5(3) के संदर्भ में आधार का मानदंड पूरा करता है।

घ. गोपनीयता**घ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध**

25. इस संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:

- क. उत्तरदाताओं ने उनके प्रश्नावली के उत्तरों के सार्वजनिक रूपांतर में सूचना न प्रदान करके अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है। यह उस सीमा तक किया गया है कि समुचित रूप से सूचीबद्ध सूचना भी प्रदान नहीं की गई है।
- ख. परिशिष्ट 1-9 के अंतर्गत, दी गई सूचना स्पष्ट रूप से प्रपत्र में नहीं है जबकि प्रपत्र के "कठोर अनुपालन" की विशेष रूप से मांग की गई है। समुचित रूप से सूचीबद्ध सूचना के अभाव में भी घरेलू उद्योग ऐसे कमीपूर्ण उत्तरों पर अपनी टिप्पणी देने में असमर्थ रह जाता है।
- ग. निर्यातकों ने शेयरधारकों के नाम, उत्पादन प्रक्रिया, कच्ची सामग्री और उपयोगी वस्तुओं की खरीद के स्रोत, कैपिटल इनपुट और संबद्धता का प्रयोग जैसी महत्वपूर्ण सूचना छिपाई है।

घ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

26. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि याचिकाकर्ता ने याचिका में दी गई लागत संबंधी सूचना में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

27. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में निम्नलिखित प्रावधान है:

"7. गोपनीय सूचना (1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप नियम (2) में निहित किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हो कि गोपनीयता के लिए अनुरोध न्यायसंगत नहीं अथवा सूचना प्रदाता सूचना को सार्वजनिक करने अथवा इसको सामान्य तौर पर अथवा संक्षिप्त रूप में उसे प्रकट करने के लिए अनिच्छुक हो, तो ऐसी सूचना की उपेक्षा की जा सकती है।"

28. गोपनीय आधार पर घरेलू उद्योग और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां तक आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है तथा सार्वजनिक फाइल में खुला नहीं रखा गया है।

ङ. बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी), सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

ङ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

29. जांच की अवधि के दौरान एमईटी, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए तथा प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:

- क. चिझोऊ लोंघुआ संबद्ध सामानों का उत्पादक है। भारत को निर्यात भारतीय ग्राहकों को तीसरे पक्ष के वितरकों के माध्यम से किए गए हैं। चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. द्वारा दिया गया उत्तर अपूर्ण है क्योंकि संबद्ध निर्यातकों से कोई उत्तर नहीं आया है जिन्होंने भारत को निर्यात किए हैं। पूरा बिक्री चैनल गायब है। अतः उत्तर सीधे ही रद्द किया जाना चाहिए।
- ख. चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल कं. ने उल्लेख किया है कि विचाराधीन उत्पाद के विनिर्माण के लिए अपेक्षित सभी इनपुट असंबद्ध आपूर्तिकर्ताओं से खरीदे जाते हैं। संबद्ध सामानों के उत्पादन के लिए अपेक्षित प्रमुख कच्ची सामग्री पीला फॉस्फोरस है जिसका उत्पादन कंपनी द्वारा किया जाता है। चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल लि. का प्रश्नावली का उत्तर इस आधार पर ही रद्द किया जाए।
- ग. अभिगमन नयाचार का एक प्रावधान 11 दिसंबर, 2016 को समाप्त हो गया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को नीचे दिए गए कारणों से गैर बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों में प्रचालन करने वाले उत्पादक के रूप में चीनी उत्पादकों पर विचार करते हुए वर्तमान जांच में आगे कार्यवाई करनी चाहिए।
- घ. वर्तमान मामले में प्राधिकारी द्वारा मानी गई जांच की अवधि जुलाई, 2015 से सितंबर, 2016 (15 माह) है। क्षति की जांच की अवधि 2013-14, 2014-15, 2015-16 और जांच की अवधि मानी गई है।
- ङ. वर्तमान मामले में जांच की अवधि जुलाई, 2015 से सितंबर, 2016 (15 माह) थी।

- च. जांच की अवधि के निर्धारण का प्रयोजन उस अवधि पर विचार करना है जब क्षति पहुँचाने वाले पाटन की मौजूदगी का दावा किया गया है और उसे सिद्ध किया गया है।
- छ. चीनी उत्पादकों को इस कारण गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनियां माना जाना अपेक्षित है कि चीन में लागत एवं कीमतें बाजार बलों को उपयुक्त रूप से नहीं दर्शाती हैं। अनुबंध-1 के पैरा 8 में उन मानदंडों का उल्लेख है जिन पर बाजार अर्थव्यवस्था स्तर प्रदान करने के लिए विचार किया जाना चाहिए।
- ज. चूंकि, चीनी कंपनियों ने दिसंबर, 2016 तक अनुबंध-1 के पैरा 8 में उल्लिखित कारणों से बाजार अर्थव्यवस्था के स्तर से इंकार किया है, अतः याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि चीनी उत्पादकों को उस समय तक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनियां माने जाने की आवश्यकता है, जब तक जांच की अवधि में अभिगम नयाचार में निर्धारित अवधि शामिल हो।
- झ. चीनी उत्पादकों को गैर बाजार अर्थव्यवस्था पर परिवेश के अंतर्गत प्रचालन करने वाली कंपनियों के रूप में माने जाने की आवश्यकता है और प्राधिकारी अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए कार्रवाई करे।
- ञ. सामान्य मूल्य इस कारण से समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में समान वस्तु की कीमत के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता कि संगत सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। याचिकाकर्ता ने भारत में उत्पादन की विधिवत समायोजित लागत के आधार पर सामान्य मूल्य मानने का दावा किया है।
- ट. इसके अतिरिक्त, चूंकि कच्ची सामग्री और संबद्ध सामानों की कीमतें काफी उतार-चढ़ाव के अध्वधीन हैं, अतः सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण माह वार आधार पर किया जाना चाहिए।
- ठ. चीन से पाटन मार्जिन केवल काफी नहीं है, बल्कि पर्याप्त भी है, इस प्रकार वह भारत में विचाराधीन उत्पाद के काफी पाटन की मौजूदगी सिद्ध करता है। चीन की आयात मात्रा वर्तमान क्षति की अवधि में पूरी तरह काफी रही है।

क.2. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

30. उत्तरदाता निर्यातक मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल कं. लि. ने यह दावा करते हुए अनुरोध दायर किए हैं कि भारत को चीन के पूर्ण बाजार अर्थव्यवस्था के स्तर को स्वीकार करना चाहिए और चीन के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क की जांच में "सरोगेट कंट्री" के दृष्टिकोण का प्रयोग करना कानूनी रूप से रोकना चाहिए। 11 दिसंबर, 2016 के बाद चीन से आयातों के लिए सामान्य मूल्य चीनी कीमतों और लागतों के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए तथा चीन को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किया जाना चाहिए।
31. निर्यातकों ने दावा किया है कि चीन से आयातों के लिए सामान्य मूल्य समान देश के आंकड़े लागू करने के बजाए निर्यातक कंपनी द्वारा दिए गए कीमत और लागत संबंधी आंकड़ों के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

क.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

क.3.1. बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच

32. याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए अनुरोधों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि डब्ल्यूटीओ के साथ चीन द्वारा हस्ताक्षरित अभिगम नयाचार के पैरा 15(क)(i) के तहत प्रतिबद्धताओं की अपेक्षा है कि जांच के अधीन उत्पादकों को स्पष्ट रूप से दर्शाना चाहिए कि विनिर्माण, उत्पादन और उस उत्पाद की बिक्री के संबंध में समान उत्पाद का उत्पादन करने वाले उद्योग में बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियां विद्यमान हैं। यह सिद्ध कर दिए जाने की स्थिति में आयातक डब्ल्यूटीओ सदस्य तुलनात्मक रूप से कीमत निर्धारण में जांच के अधीन उद्योग के लिए चीनी कीमतों अथवा लागतों का प्रयोग कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त, डब्ल्यूटीओ के अनुच्छेद 2.2.1.1 तथा भारत की पाटनरोधी नियमावली में यह अपेक्षित है कि उत्पादक/ निर्यातक के वित्तीय रिकार्ड उत्पादन लागतों को दर्शाएं। अतः सूचना तथा निम्नलिखित के संबंध में उसके समर्थक साक्ष्य दिए जाने की आवश्यकता है।
 - क. कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकी एवं श्रम की लागत, उत्पादन, बिक्री और निवेश सहित कीमत, लागत, इनपुट के संबंध में निर्णय बाजार संकेत के अनुरूप किए जाते हैं जो आपूर्ति एवं मांग दर्शाते हैं तथा जिनमें काफी सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता और चाहे प्रमुख इनपुट की लागत, बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से दर्शाएं।
 - ख. उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति किसी ह्रास के कारण नहीं बिगड़ती।
 - ग. उत्पादक/निर्यातक दिवालियापन तथा संपत्ति कानून के अध्वधीन होते हैं जो फर्म के प्रचालन के लिए कानूनी निश्चितता तथा स्थिरता की गारंटी देते हैं।
 - घ. विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर निकाली जाती है।

क.3.2. चीन जन गण में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन गण से निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए थे:

क. मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि.

ख. मैसर्स अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लिमिटेड (पूर्व में मैसर्स चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. के रूप में ज्ञात)

34. यद्यपि मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा करते हुए पूरक प्रश्नावली प्रस्तुत नहीं की है। तथापि, मैसर्स चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी पूरक प्रश्नावली प्रस्तुत की थी। तथापि, उन्होंने जांच की अवधि के दौरान बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार के लिए अपना दावा वापस ले लिया है।
35. प्राधिकारी चीन जन गण से दो उत्पादकों/निर्यातकों के सहयोग तथा इसमें प्रतिभागिता को मानते हैं। चूंकि, इन दो उत्पादकों/निर्यातकों में से एक ने बाजार अर्थव्यवस्था के स्तर का दावा नहीं किया और दूसरे ने उसे जांच के दौरान वापस ले लिया, इससे प्राधिकारी द्वारा इन दो निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य निर्मित करना आवश्यक हो गया। ऐसा करने में कीमतों और लागत उतनी उपयुक्त बनाने में पूरी सावधानी बरती गई जो कि उन दो उत्पादकों/निर्यातकों ने वास्तव में अपने गृह बाजार में की थीं और यथा संभव उसके निकट थीं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन गण में उत्पादकों/निर्यातकों को इस बात का स्वाभाविक लाभ है कि संबद्ध सामान के विनिर्माण के लिए लागत का लगभग 70 प्रतिशत मूलभूत कच्ची सामग्री "पीला फॉस्फोरस" है। पीला फॉस्फोरस खनन किया जाता है और प्रमुख रूप से चीन, कजाखिस्तान और वियतनाम में उत्पादित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, यह नोट किया जाता है कि चीन जन गण सरकार उस देश से पीले फॉस्फोरस के निर्यात पर निर्यात शुल्क लगाता है। इससे एक ओर इसका प्रयोग करने वाली चीनी उत्पादकों को लागत संबंधी लाभ मिलता है जबकि दूसरी ओर यह दूसरे देशों को चीन से प्राप्त कीमतों के निकट अंतर्राष्ट्रीय रूप से कीमत से पीला फॉस्फोरस उत्पादित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, किसी भी स्रोत से इस कच्ची सामग्री का आयात करने वाले भारत में विनिर्माता को लागत संबंधी हानि का सामना करना पड़ता है, फिर भी चीन जन गण में विनिर्मित संबद्ध सामानों के लिए सामान्य मूल्य निर्मित करने में भारत में पीले फॉस्फोरस की पहुँच कीमत से निर्यात शुल्क के लिए प्राधिकारी ने कटौती प्रदान की है क्योंकि चीन स्थित उत्पादक कच्ची सामग्री और उपयोगी वस्तुओं, परिवर्तन लागत, ब्याज, एसजीई आदि के लिए उस पर उपयुक्त लाभ सहित घरेलू उद्योग की कच्ची सामग्री की लागत, घरेलू उद्योग के इष्टतम खपत मानदंडों के संबंध में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना का प्रयोग करते हुए भाड़ा, समुद्री बीमा तथा अन्य आकस्मिक खर्चों सहित उस पर खर्च नहीं करता।
36. सामान्य मूल्य निर्मित करने में प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध सामान वातावरण के लिए संवेदनशील है और इसीलिए पैकिंग उत्पादन का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पादन के बाद संबद्ध सामान या तो प्लास्टिक ड्रमों में पैक किया जाता है जो अधिक महंगे हैं अथवा प्लास्टिक लाइन के कागज के बैगों में पैक किया जाता है। मुख्य रूप से प्रयुक्त पैकेजिंग की दो किस्मों के बीच कीमत संबंधी अंतर को देखते हुए इस प्रकार सामान्य मूल्य *** अमेरिकी डॉलर/मी. टन के रूप में माना गया है, जब "प्लास्टिक लाइन" कागज के बैगों में पैक किया जाए और जब प्लास्टिक बैगों में पैक किया जाए *** अमेरिकी डॉलर/मी. टन माना गया है।

ऊ.3.3. चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान) के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किशुयान ने "प्लास्टिक लाइन" कागज के बैगों में पैक किए गए संबद्ध सामानों को भारत में *** मी. टन बेचा और प्लास्टिक ड्रमों में पैक किए गए संबद्ध सामान को *** मी. टन बेचा। भारत औसत सीआईएफ कीमत *** अमेरिकी डॉलर/मी. टन के रूप में निर्धारित की जाती है। प्राधिकारी ने कारखानागत स्तर पर निवल निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, पत्तन सार संभाल प्रभार, बैंक प्रभार, ऋण लागत, गैर वापसी वैट आदि के निमित्त समायोजनों की अनुमति दी है। कारखानागत निर्यात कीमत व्यापार भारत आधार पर *** अमेरिकी डॉलर/मी. टन के रूप में निर्धारित की गई।

ऊ.3.4. अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लिमिटेड (पूर्व में मैसर्स चिझोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. के रूप में ज्ञात) के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि लोंघुआ ने *** मी. टन संबद्ध सामान भारत को सीधे ही बेचे। भारत औसत सीआईएफ कीमत *** अमेरिकी डॉलर/मी. टन के रूप में निर्धारित की जाती है। प्राधिकारी ने कारखानागत स्तर पर निवल निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, पत्तन सार संभाल प्रभार, बैंक प्रभार आदि के निमित्त समायोजनों की अनुमति दी है। कारखानागत निर्यात कीमत *** अमेरिकी डॉलर/मी. टन के रूप में निर्धारित की गई।

ऊ.3.5. असहयोगी उत्पादकों और चीन में निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

39. चीन के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मानी गई है। इस आधार पर पाटन मार्जिन संगत तालिका में दर्शाया गया है।

ऊ.3.6. पाटन मार्जिन का परिकलन

40. ऊपर निर्धारित किए गए अनुसार उपर्युक्त सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना करते हुए जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन निम्नलिखित है:

पाटन मार्जिन

उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य अमेरिकी डॉलर/मी. टन	निर्यात कीमत अमेरिकी डॉलर/मी. टन	पाटन मार्जिन अमेरिकी डॉलर/मी. टन	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज %
मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान)	मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान)	***	***	***	***	20-30
* अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि.	* अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि.	***	***	***	***	25-35
अन्य सभी		***	***	***	***	45-55

* पूर्व में मैसर्स चिञ्जोऊ लोंघुआ फामकिम कं. लि. के रूप में ज्ञात

41. यह देखा जाता है कि पाटन मार्जिन संबद्ध देश से प्रत्येक सहयोगी उत्पादक/निर्यातक और असहयोगी उत्पादक/निर्यातक से किए गए निर्यातकों के संबंध में नियमावली के तहत निर्धारित न्यूनतम सीमाओं से अधिक है।

च. क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण

च.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

42. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

- क. क्षति की अवधि में आयात की काफी मात्रा पाटित कीमतों पर देश में आई थी। आयात 2014-15 में आंशिक रूप से कम हुए और उसके बाद 2015-16 में कम हुए। तथापि, जांच की अवधि में आयात बढ़े हैं। जांच की अवधि में आयात पूर्व वर्ष की तुलना में 16 प्रतिशत की वृद्धि और आधार वर्ष की तुलना में 7 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हैं जबकि उत्पाद के लिए मांग पूर्व वर्ष की तुलना में केवल 8 प्रतिशत वृद्धि दर्शाती है।
- ख. भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में आयात काफी थे जबकि जांच की अवधि में आयात पूर्व वर्ष की तुलना में 16 प्रतिशत तक बढ़े, घरेलू उद्योग को पिछले वर्ष की तुलना में 8 प्रतिशत तक की बिक्री की हानि हुई।
- ग. आयातों का बाजार हिस्सा पिछले वर्ष की तुलना में 2014-15 में कम हुआ। तथापि, उसके बाद पाटित आयातों का बाजार हिस्सा निरंतर बढ़ता रहा है और घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा निरंतर गिरता रहा है।
- घ. संबद्ध आयातों का घरेलू मांग के महत्वपूर्ण भाग को पूरा करने की क्षमता रखने वाले घरेलू उद्योग के बावजूद काफी और प्रमुख बाजार हिस्सा है।
- ङ. संबद्ध आयातों से घरेलू कीमतों की काफी कटौती हो रही है। आयात कीमतें घरेलू कीमतों पर दबाव पैदा कर रही हैं जिसके परिणामस्वरूप 2015-16 में और उसके बाद जांच की अवधि में लाभ में कमी हुई।
- च. आयात कीमतों में निरंतर गिरावट आई। यह गिरावट जांच की अवधि में और अधिक थी।
- छ. घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री 2014-15 में पूर्व वर्ष की तुलना में बढ़ी। तथापि, उसके बाद 2015-16 में उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग कम हुआ और फिर जांच की अवधि में भी इसमें गिरावट आई। यद्यपि याचिकाकर्ता को 2014-15 की तुलना में जांच की अवधि में 14 प्रतिशत उत्पादन हानि हुई, तथापि, उसी अवधि के दौरान उसे 16 प्रतिशत की बिक्री हानि हुई। घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग देश में काफी मांग के बावजूद प्राप्य स्तरों से काफी कम है।
- ज. पर्याप्त एवं बढ़ती हुई मांग पर विचार करते हुए, 2014-15 में उत्पादन का स्तर प्राप्त करने पर उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग, उसके बाद कम से कम सुधर जाना चाहिए था और कम नहीं होना चाहिए था, जैसा कि वस्तुतः घरेलू उद्योग के साथ हुआ है। यद्यपि, बढ़ती हुई मांग के साथ उत्पादन और बिक्री में वृद्धि एक स्वाभाविक व्यापारिक स्थिति है, तथापि, 2014-15 में वृद्धि के बाद उत्पादन और बिक्री में गिरावट कम से कम अधिक असामान्य है और यह बिक्रीत व्यापारिक निष्पादन दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, यद्यपि 2014-15 और जांच की अवधि के बीच उत्पादन में 16 प्रतिशत तक की गिरावट आई, तथापि, आयातों में 12 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।
- झ. घरेलू उद्योग में औसत मालसूची एक बार फिर जांच की अवधि में बढ़ गई।
- ञ. लाभ, व्याज पूर्व लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ के संदर्भ में घरेलू उद्योग के निष्पादन में 2014-15 में सुधार आया और उसके बाद काफी गिरावट आई। जांच की अवधि में लाभ 2014-15 का केवल 30 प्रतिशत लाभ था। आरओआई बहुत तेजी से कम हुए और 2014-15 में आरओआई के केवल 23 प्रतिशत थे।

- ट. पर्याप्त क्षमता और रोजगार स्तर के बावजूद घरेलू उद्योग उत्पादन, विक्री, क्षमता उपयोग, लाभ, नकद लाभ, निवेश पर आय और बाजार हिस्सा जैसे कीमत मानदंडों तथा मात्रा के संदर्भ में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं कर पाया।
- ठ. याचिकाकर्ता की क्षमता विस्तार करने की योजना और उसने उत्पादन बढ़ाने के लिए मौजूदा संयंत्र की दक्षता में सुधार लाने के लिए कदम भी उठाए हैं।
- ड. पाटित आयातों की भारी मात्रा के मद्देनजर याचिकाकर्ता के पास अर्थक्षम बने रहने के लिए उत्पाद का निर्यात करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।
- ढ. चूंकि याचिकाकर्ता भारत में P_2O_5 के पाटन को देखते हुए क्षमता का उपयोग करने में असमर्थ था, अतः याचिकाकर्ता ने विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन बढ़ाने के लिए निचले उत्पादों के उत्पादन के लिए विकल्पों का पता लगाया। याचिकाकर्ता ने जांच की अवधि (लगभग जुलाई, 2016) में पॉलीफॉस्फोरिक एसिड (पीपीए) के कुछ परीक्षण उत्पादन आरंभ किए और फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का 8 मी. टन कैप्टिव रूप से प्रयुक्त किया गया था।
- ण. पाटन मार्जिन केवल न्यूनतम से अधिक ही नहीं है, अपितु काफी भी है। क्षति मार्जिन भी सकारात्मक और काफी है।
- त. अंतिम छोर से अंतिम छोर तक विश्लेषण के बजाए जांच की अवधि के भीतर घरेलू उद्योग की आर्थिक स्थिति की जांच यह दर्शाती है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- थ. घरेलू उद्योग ने निर्धारित शुल्कों के रूप में पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।
- द. पीला फॉस्फोरस अत्यधिक ज्वलनशील और प्रतिक्रियाकारक होने के नाते परिवहन में अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। टैंकर चढ़ाकर परिवहन करना ड्रमों में पैकिंग के बजाए अधिक खर्चीला है। इसके अतिरिक्त, टैंकरों से परिवहन में दो तरह का भाड़ा लगता है जो कि पीले फॉस्फोरस के खतरनाक प्रकृति के होने के कारण है।
- ध. पीले फॉस्फोरस से फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के उत्पादन में काफी मूल्यवर्द्धन शामिल होता है क्योंकि कच्ची सामग्री और विचाराधीन उत्पाद दोनों के लिए अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है।
- न. याचिकाकर्ता के पास उत्पादन परिवर्तन के अनुपात, डिजाइन, संघटता और पर्यावरण की अनुकूलता तथा कम कार्बन फुटप्रिंट प्रौद्योगिकी की दृष्टि से नवीनतम एवं बेहतर प्रौद्योगिकी है क्योंकि वे द्रव ऑक्सीजन का प्रयोग करते हैं न कि वायु ऑक्सीजन। चीन के मामले में वायु से ऑक्सीजन निकालने में उसकी अपनी पूंजी और संचालन लागत शामिल होगी जो स्पष्ट रूप से टैंकरों में द्रव ऑक्सीजन खरीदकर बचाई जाती है। इसके अतिरिक्त, चूंकि 79 प्रतिशत शेष वायु अभिक्रिया में भाग नहीं ले रही है, अतः फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड वाष्पों से युक्त अन्य गैसों की भारी मात्रा को स्क़ब करना होता है जिससे स्क़बर पर अधिक भार डाला जाता है।
- प. याचिकाकर्ता अपनी कैप्टिव खपत के लिए अभिक्रिया के ताप का भी प्रयोग करते हैं जो कि अंतरण के लिए फॉस्फोरस ड्रमों और लाइनों को पिघलाना है।
- फ. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड अभिक्रिया में भाग लेता है तथा डाइलुट फॉस्फोरिक एसिड एक उप उत्पाद के रूप में आता है। उप उत्पाद मूल्य के रूप में लगभग फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड की लगभग 30 प्रतिशत लागत वसूल की जाती है।
- ब. घरेलू उद्योग के उत्पाद का प्रयोक्ता उद्योग के लिए काफी मूल्य नहीं है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से निचले उत्पाद की लागत पर कोई भारी प्रभाव नहीं पड़ेगा।

च.2 उत्पादकों/निर्यातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

43. इस जांच में निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने क्षति एवं कारणात्मक संपर्क के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:
- क. भारत में फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड की आवश्यकता लगभग 4000 मी. टन की होती है जबकि भारत 2000 मी. टन का उत्पादन कर रहा है। अतः यह बहुत भारी कमी दर्शाता है। अंतिम प्रयोक्ता पर्याप्त मात्रा में प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं और उनके पास आयात करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता।
- ख. याचिकाकर्ता की क्षमता अपर्याप्त है। इसके अतिरिक्त, वे 600 से 800 मी. टन का निर्यात करते हैं और फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का पॉली फॉस्फोरिक एसिड (पीपीए) के उत्पादन के लिए कैप्टिव रूप से उपभोग किया जाता है जिससे स्थानीय प्रयोक्ताओं के लिए बहुत कम मात्रा रह जाती है।
- ग. हमारे परिष्कृत रंजक उत्पाद का 1 किलोग्राम बनाने के लिए फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के 2.5 किलोग्राम का प्रयोग किया जाता है, अतः फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड की कीमत में किसी वृद्धि से हमारी उत्पाद कीमत काफी प्रभावित होगी।
- घ. पाटनरोधी शुल्क लगाने से बाजार में एकाधिकारी स्थितियां बनेंगी क्योंकि याचिकाकर्ता की क्षमता सीमित है। इसके परिणामस्वरूप, आपूर्ति की सतर्कता का मुद्दा बनेगा और उत्पाद की कीमत की भी समस्या बनेगी।
- ड. याचिकाकर्ता की शेयर पूंजी केवल 25 लाख रुपए है और भारतीय मांग में उत्पाद मूल्य केवल 50-60 करोड़ रुपए है। इसकी तुलना में प्रयोक्ता उद्योग का कारोबार 500-1000 करोड़ रुपए है।

- च. याचिकाकर्ता का उत्पाद प्रतिस्पर्द्धी नहीं है क्योंकि याचिकाकर्ता पीले फॉस्फोरस का आयात कर रहा है और फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड बना रहा है। फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के लिए मुख्य कच्ची सामग्री पीला फॉस्फोरस है जिसका आयात चीन और वियतनाम से किया जाता है। चीन से पीले फॉस्फोरस पर 20 प्रतिशत निर्यात शुल्क लगाने से भारत में वियतनाम की कीमतें भी उन बड़ी हुई कीमतों के समान हैं। पीले फॉस्फोरस की आयात कीमतें अधिक हैं क्योंकि निर्यातक देश चीनी पीले फॉस्फोरस की कीमतों के आधार पर अपनी कीमतों का निर्धारण कर रहे हैं जो कि चीन में निर्यात शुल्क के कारण अधिक हैं।
- छ. चीनी फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के निर्माता पीले फॉस्फोरस की खरीद कर रहे हैं जो कि टैंकर भार में कच्ची सामग्री है जबकि भारतीय विनिर्माता ड्रमों में आयात कर रहा है जो उनकी कच्ची सामग्री की लागत को बढ़ा देता है और उनकी प्रतिस्पर्द्धात्मकता को कम कर देता है।
- ज. चीन उन्नत प्रौद्योगिकी से विनिर्माण कर रहा है जहां वह वायु से ऑक्सीजन निकालते हैं जबकि याचिकाकर्ता सिलेंडरों में द्रव ऑक्सीजन खरीदने की बहुत पुरानी पद्धति का उपयोग कर रहा है।
- झ. चीनी निर्यातक भाप सृजन के लिए उत्पादन प्रक्रिया में सृजित ताप का प्रयोग कर रहा है जिसकी बिक्री/प्रयोग अन्य उत्पादों के लिए किया जाता है जबकि भारतीय उत्पादकों द्वारा ऐसा कोई प्रयोग नहीं किया जाता।
- ञ. याचिकाकर्ता ने 2014-15 से क्षति मानदंडों की तुलना की है जबकि यह तुलना आधार वर्ष, 2013-14 से की जानी चाहिए। आधार वर्ष से तुलना सभी मानदंडों, मात्रा तथा कीमत के संबंध में सुधार दर्शाएगी।
- ट. लगाई गई पूंजी आधार वर्ष 2013-14 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान 100 से 356 सूचकांक तक बढ़ी है। तथापि, संस्थापित क्षमता में कोई वृद्धि नहीं है।
- ठ. प्राधिकारी ने उन मामलों को रद्द किया है जिनमें घरेलू उद्योग भारी लाभ अर्जित कर रहा था और अपने उत्पादों की बिक्री एनआईपी से अधिक ऊपर की कीमत पर कर रहा था।
- ड. घरेलू और पहुँच कीमतों की प्रवृत्तियां पीले फॉस्फोरस की कीमतों में कमी के कारण कम हो रही हैं। जांचकर्ता प्राधिकारियों को अन्य ज्ञात कारकों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का समुचित मूल्यांकन करना चाहिए।
- ढ. वर्तमान मामले में कीमत कटौती संगत नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग ने अपने निष्पादन में सुधार किया है और उसकी बिक्री वसूली उसकी क्षति रहित कीमत से अधिक है।
- ण. लगाई गई पूंजी में निवल मूल्य और कंपनी का ऋण है। लगाई गई पूंजी के दोनों घटकों पर समान रूप से 22 प्रतिशत अपनाकर आय का परिकलन पूर्णतः गलत है।
- त. पीसीपीएल की प्रौद्योगिकी अप्रयोज्य है और उन्हें दक्षिण अफ्रीका में निवेशों पर हानियां हुई हैं।
- थ. यह तथ्य कि केवल 25 लाख रुपए की लगाई गई पूंजी से कंपनी 3000 टन की सामग्री का विनिर्माण कर सकती है, यह दर्शाता है कि बिचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने के लिए अधिक पूंजी और उच्चतर प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती।
- द. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड के उत्पादन के लिए ऑक्सीकरण अभिक्रिया की बहुत आधारभूत प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है। तथाकथित 30 प्रतिशत मूल्यवर्द्धन खर्चीले द्रव ऑक्सीजन, पुरानी प्रौद्योगिकी के कारण उच्च विनिर्माण लागत तथा अधिक पैटर्न लागत के कारण हो सकता है।
- ध. कच्ची सामग्री की लागत स्वयं में 335 अमेरिकी डॉलर – 350 प्रति मी. टन तक खर्चीली है।
- न. द्रव ऑक्सीजन वायु से संपीड़न ऑक्सीजन की बजाए 95 अमेरिकी डॉलर – 110 प्रति मी. टन तक अधिक खर्चीली है।
- प. फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड अभिक्रिया में भाग ले रहा है और कम फॉस्फोरिक एसिड उप उत्पाद के रूप में आता है। फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का प्रयोग चक्रीकरण प्रक्रिया में किया जाता है, अतः इस प्रक्रिया में फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड का मूल्य खपत किए जा रहे परिष्कृत उत्पाद को देने के लिए बहुत अधिक है। उदाहरण के लिए परिष्कृत फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड 117 रुपए प्रति किलोग्राम है जबकि खर्च किया गया फॉस्फोरिक एसिड 10 रुपए प्रति किलोग्राम से कम होगा (एसिड के संकेंद्रीकरण पर निर्भर)। अतः यह मूल्य उपयोग परिष्कृत उत्पाद के भाग के रूप में गिना जाता है।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

44. प्राधिकारी घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों तथा उनमें उठाए गए विभिन्न मुद्दों को नोट करते हैं और उनका समाधान यहां नीचे संगत पैराग्राफों में किया गया है।
45. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से बाजार में एकाधिकार की स्थितियां बनेंगी, यह नोट किया जाता है कि उचित कीमतों पर आयातों की आपूर्ति पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से किसी भी तरह प्रतिबंधित नहीं होती है। पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्य रूप में पाटन की अनुचित व्यापारिक परिपाटियों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में एक खुली और उचित प्रतिस्पर्द्धा की स्थिति स्थापित की जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लगाए जाने से किसी भी तरह संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसीलिए ग्राहकों को संबद्ध सामानों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

46. इस तर्क के संबंध में कि याचिकाकर्ता ने क्षमता के विस्तार के संबंध में कोई दावा नहीं किया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि याचिकाकर्ता ने अपनी विस्तार योजनाओं और उसके कार्यान्वयन के लिए मानचित्र के संबंध में सूचना प्रदान की है, तथापि, यह मुद्दा वर्तमान जांच के लिए संगत नहीं है।
47. प्रौद्योगिकी में अंतरों के तर्क के संबंध में यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी चीनी विनिर्माताओं की प्रौद्योगिकी से तुलनीय है। जहां तक 22 प्रतिशत की दर पर लगाई गई पूंजी पर आय के प्रावधान के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह प्राधिकारी की सतत परिपाटी रही है कि वह 22 प्रतिशत पर लगाई गई पूंजी पर आय प्रदान करे और उसी को इस मामले में भी अपनाया गया है।
48. जहां तक इस अनुरोध का संबंध है कि संबद्ध सामानों के विनिर्माण के लिए चीन में उन्नत प्रौद्योगिकी अपनाई जा रही है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी पक्षकार ने उस संबंध में कोई सत्यापनीय साक्ष्य नहीं दिया है। प्राधिकारी मानते हैं कि संबद्ध सामानों के उत्पादन के लिए अपेक्षित मुख्य कच्ची सामग्री पीला फॉस्फोरस और ऑक्सीजन है। यद्यपि ऑक्सीजन चीन के उत्पादकों द्वारा हवा से सीधे ही निकाली जाती है, तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा उसकी खरीद प्रतिस्पर्द्धी दरों पर की जाती है। याचिकाकर्ता द्वारा दायर की गई लागत संबंधी सूचना यह नहीं दर्शाती कि वायु के कारण लागत इतनी भिन्न हो सकती है कि चीनी उत्पादक इतनी कम कीमत पर उत्पाद बेच सकें। वस्तुतः याचिकाकर्ता के मामले में ऑक्सीजन के निमित्त लागत कुल लागत की केवल 4 प्रतिशत है। किसी भी दशा में उत्पादन प्रक्रिया में संभावित अंतर किसी भी तरह घरेलू उद्योग के चीनी उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा किए जा रहे पाटन की अनुचित व्यापारिक परिपाटी के विरुद्ध संरक्षण मांगने के अधिकार को प्रभावित नहीं करता। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा रखे गए रिकार्ड से सत्यापित लागत संबंधी आंकड़ों/सूचना के आधार पर पाटनरोधी नियमों के अनुसार एनआईपी निकाली है।
49. जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा किए गए 25 लाख रुपए के छोटे से निवेश के संरक्षण की आवश्यकता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रदत्त शेयर पूंजी कंपनी में वास्तविक निवेश की संकेतक नहीं है। यह मामला जांच के लिए संगत नहीं है और प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेश का स्तर पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने तथा अन्यथा लगाए जाने के लिए मानदंड नहीं है।
50. जहां तक इस अनुरोध का संबंध है कि जब एनएसआर एनआईपी से अधिक है तो जांच रद्द की जानी चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एनआईपी के परिकलन का प्रयोजन प्राथमिक रूप से क्षति मार्जिन का परिकलन करना है अर्थात् परिकलित एनआईपी का प्रयोग क्षति के संबंध में निष्कर्ष निकालना नहीं है। तथापि, यदि परिकलित एनआईपी क्षति की अवधि के दौरान निवल बिक्री वसूली से काफी और सतत रूप से कम है, तो यह जांच के अन्य तत्वों के साथ बढ़ने पर यह दर्शा सकती है कि क्षति काफी नहीं है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पूर्व में दोनों प्रकार के निर्णयों अर्थात् एनएसआर के एनआईपी से अधिक होने पर पाटनरोधी शुल्क लगाना और न लगाना सभी संगत कारकों को अनुकूल रूप से विचार में लाने के बाद किया गया है।
51. निम्नलिखित विश्लेषण यथातथ्यतः हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए अन्य विभिन्न मुद्दों का समाधान करता है।

च.4 क्षति एवं कारणात्मक संपर्क की जांच

52. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-II(iv) के अनुसार उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संगत आर्थिक कारकों और तत्वों पर विचार किया है।

च.4.1 मांग एवं बाजार हिस्से का मूल्यांकन

53. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए भारत में उत्पाद की मांग अथवा स्पष्ट खपत को सभी स्रोतों से भारतीय उत्पादकों और आयातों की घरेलू बिक्री की मात्रा के रूप में परिभाषित किया है। इस प्रकार, आंकलित मांग निम्नलिखित तालिका में दी गई है।

मांग	यूओएम	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई-ए
चीन से आयात	मी. टन	3,143	2,995	2,906	3,367
अन्य देशों से आयात	मी. टन	0	0	0	0
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. टन	616	1,404	1,286	1,181
प्रवृत्ति		100	228	209	192
मांग	मी. टन	3,759	4,398	4,192	4,548
प्रवृत्ति		100	117	112	121

बाजार हिस्सा	%				
आयात - चीन	%	83.60%	68.08%	69.31%	74.04%
आयात - अन्य देश	%	0.00%	0.00%	0.00%	0.00%
घरेलू उद्योग	%	16.40%	31.92%	30.69%	25.96%

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद की मांग इस अवधि में बढ़ी है। यद्यपि, 2015-16 में संबद्ध सामानों की मांग में थोड़ी सी गिरावट आई, तथापि, वह आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में 21 प्रतिशत तक बढ़ी। यह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध आयातों का पूरी क्षति की अवधि में भारतीय बाजार में भारी हिस्सा रहा।

च.4.2 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का मात्रात्मक एवं कीमत प्रभाव

(क) मात्रात्मक प्रभाव: संबद्ध देश की आयात मात्रा और हिस्सा

55. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या पूरी दृष्टि से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है। संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयात की मात्रा का विश्लेषण निम्नलिखित रूप में किया गया है:

आयात मात्रा	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई-ए
चीन	मी. टन	3,143	2,995	2,906	3,367
अन्य देश	मी. टन	0	0	0	0
कुल आयात	मी. टन	3,143	2,995	2,906	3,367
कुल आयात	%	100%	100%	100%	100%
मांग	मी. टन	3,759	4,398	4,192	4,548
उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
मांग	%	84%	68%	69%	74%
उत्पादन	%	267%	150%	157%	196%

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन से आयात 2015-16 तक कम हुए और फिर जब विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग केवल 8 प्रतिशत तक बढ़ी तो जांच की अवधि में 16 प्रतिशत तक बढ़े। जांच की अवधि में आयात वृद्धि दर्शाते हैं, चाहे उनकी तुलना आधार वर्ष से की जाए अथवा पूर्ववर्ती वर्ष से। पूरी क्षति की अवधि में किसी भी अन्य देश से कोई आयात नहीं हुए। यह पाया गया है कि संबद्ध आयात पूरी दृष्टि से अथवा क्षति की अवधि में और जांच की अवधि में तथा घरेलू उद्योग में अनुपयुक्त क्षमताओं के बावजूद सापेक्ष दृष्टि से काफी अधिक हैं।

(ख) पाटित आयातों का कीमत प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

57. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को इस पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत के साथ तुलना करके पाटित आयातों द्वारा काफी कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव काफी मात्रा तक कीमतों का ह्रास करने और कीमतों में वृद्धि रोकने के लिए अन्यथा है, जो कि अन्यथा काफी मात्रा तक हुई होती। तदनुसार, संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कीमत न्यूनीकरण/कीमत ह्रास तथा कम कीमत पर बिक्री, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजन के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देश से आयातों की पहुँच कीमत से की गई है।

(I) कीमत कटौती

58. कीमत कटौती का निर्धारण भारत में घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए संबद्ध सामानों की निवल बिक्री वसूली से संबद्ध देश से आयातों के पहुँच मूल्य के साथ तुलना करके की गई है।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
निवल बिक्री वसूली	रु./मी. टन	***	***	***	***
पहुँच कीमत	रु./मी. टन	110,080	109,252	104,073	100,693
कीमत कटौती	रु./मी. टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती	रेंज	10-20%	10-20%	10-20%	20-30%

59. यह देखा जाता है कि चीन से आयात क्षति की अवधि और जांच की अवधि में घरेलू कीमतों की काफी कटौती कर रहे हैं। कटौती की मात्रा क्षति की अवधि में काफी बड़ी जबकि घरेलू उद्योग की एनएसआर जांच की अवधि और 2013-14 के बीच समान स्तर पर रही, आयातों की पहुँच कीमत क्षति की अवधि में लगभग 9 प्रतिशत तक कम हुई।

(II) पाटित आयातों का कीमत न्यूनीकरण/ह्रास प्रभाव

60. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों का प्रभाव भारत में समान वस्तु की कीमतों का ह्रास करने अथवा उनका न्यूनीकरण करने के लिए था, अथवा कीमत वृद्धि रोकने के लिए था जो कि अन्यथा हो गई होती, प्राधिकारी घरेलू उद्योग की लागत और कीमतों में परिवर्तनों को निम्नलिखित रूप में नोट करते हैं।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
बिक्री की लागत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	92	94	98
बिक्री कीमत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	99	97	100
पहुँच कीमत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	99	95	91

61. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बिक्री की लागत की तुलना यह दर्शाती है कि बिक्री लागत तथा बिक्री कीमत दोनों में 2014-15 में गिरावट आई। जबकि 2015-16 और जांच की अवधि में बिक्री की लागत में वृद्धि हुई, बिक्री कीमत फिर 2015-16 में कम हो गई और फिर जांच की अवधि में बढ़ गई। आयातों की पहुँच कीमत पूरी क्षति की अवधि में और जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत से कम रही। जबकि उत्पादन लागत में केवल लगभग 2 प्रतिशत की गिरावट आई, आयात कीमतों में लगभग 9 प्रतिशत तक की गिरावट आई।

(III) पाटित आयातों का कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव

62. पाटित आयातों के कम कीमत पर बिक्री के प्रभावों की जांच करने के लिए आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना निर्धारित क्षति रहित कीमत से की गई है। यह विश्लेषण दर्शाता है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से वास्तविक रूप से कम था जो कि निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है:

विवरण	रु./मी. टन
क्षति रहित कीमत	***
पहुँच मूल्य	***
क्षति मार्जिन	***
क्षति मार्जिन %	***
क्षति मार्जिन (रेंज)	10-20%

(ग) पाटित आयातों का मात्रात्मक एवं कीमत प्रभाव संबंधी निष्कर्ष

63. यह देखा जाता है कि भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में तथा पूर्ण रूप से संबद्ध आयातों की मात्रा में काफी वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त, संबद्ध आयातों से घरेलू कीमतों की कटौती हो रही है और कम बिक्री हो रही है तथा संबद्ध आयातों का प्रभाव बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर न्यूनीकरण/ह्रास का प्रभाव का कारण बन रहे हैं।

च.4.2 घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मानदंडों की जांच

64. नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।
65. तदनुसार, घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मानदंडों का विश्लेषण यहां नीचे किया गया है:

(क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

66. निम्नलिखित तालिका क्षति जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री दर्शाती है।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई-ए
क्षमता	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	100	100	100
उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	170	158	146
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	170	158	146
घरेलू बिक्री	मी. टन	616	1,404	1,286	1,181
प्रवृत्ति		100	228	209	192
मांग	मी. टन	3,759	4,398	4,192	4,548
प्रवृत्ति		100	117	112	121

67. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग का उत्पादन और घरेलू बिक्री 2014-15 में बढ़ी, परंतु उसके बाद 2015-16 तथा फिर जांच की अवधि में उसमें काफी गिरावट आई। याचिकाकर्ता को जांच की अवधि में 14 प्रतिशत की उत्पादन हानि और 2014-15 की तुलना में 16 प्रतिशत बिक्री की हानि हुई। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया कि 2014-15 में उत्पादन एवं बिक्री का स्तर प्राप्त करने पर और यह मानने पर कि विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग उसके बाद कम नहीं हुई, यह केवल पाटन के कारण हुआ है, उसे उसके बाद इतना कम क्यों होना चाहिए था। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग देश में काफी मांग के बावजूद प्राप्त किए जाने योग्य स्तरों से काफी कम है।

(ख) मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा

68. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर संबद्ध आयातों के प्रभाव की जांच निम्नलिखित रूप में की गई है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा पूरी क्षति जांच अवधि और जांच की अवधि में कम रहा है। इसके अतिरिक्त, 2014-15 में बाजार हिस्से में वृद्धि के बाद वह 2015-16 और जांच की अवधि में कम हो गई।

मांग में बाजार हिस्सा	यूओएम	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई-ए
घरेलू उद्योग	%	16.40%	31.92%	30.69%	25.96%
चीन से आयात	%	83.60%	68.08%	69.31%	74.04%
कुल	%	100%	100%	100%	100%

(ग) लाभ/हानि, नकद प्रवाह, लगाई गई पूंजी पर आय संबंधी वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

69. लाभप्रदता के मानदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई-ए
बिक्री की लागत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	92	94	98
बिक्री कीमत	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	99	97	100
लाभ/हानि	रु./मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		(100)	1,010	482	227
लाभ/हानि	रु. लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति		(100)	2,299	1,005	434
नकद लाभ	रु. लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	3,373	1,672	952
पीबीआईटी	रु. लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	55,367	25,320	12,836
आरओसीई	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	19,663	7,962	3,586

70. यह देखा जाता है कि लाभ, नकद लाभ तथा निवेश पर आय 2014-15 में बढ़ी। इन मानदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन, उसके बाद 2015-16 और जांच की अवधि में कम हुआ। घरेलू उद्योग को 2013-14 में उस समय हानियां हुईं जब उसका क्षमता उपयोग कम था। तथापि, चूंकि मांग 2014-15 में बढ़ी और आयात कम हुए, अतः घरेलू उद्योग हानियों से उभरने में और लाभ कमाने में सक्षम था। तथापि, जांच की अवधि में आयातों में काफी वृद्धि से घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ काफी कम हो गये।

(घ) रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

71. रोजगार और मजदूरी के संबंध में नीचे दिए गए आंकड़े 2015-16 तक रोजगार में वृद्धि दर्शाते और फिर जांच की अवधि में गिरावट दर्शाते हैं। क्षति की अवधि में और जांच की अवधि में मजदूरी बढ़ी है। निम्नलिखित सूचना यह दर्शाती है कि उत्पादकता 2014-15 में बढ़ी और फिर उत्पादन के स्तर के अनुरूप कम हुई।

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई-ए
रोजगार	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	186	154
मजदूरी	रु. लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	170	295	291
प्रति दिन उत्पादकता	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	170	158	146
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	138	85	95

(ङ) मालसूची पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

72. मालसूची के संबंध में सूचना निम्नलिखित तालिका से देखी जा सकती है:

विवरण	यूनिट	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
औसत मालसूची	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति		100	42	25	88

73. घरेलू उद्योग में औसत मालसूची 2015-16 तक कम हुई और फिर जांच की अवधि में बढ़ गई।

(च) नए निवेश जुटाने में क्षमता पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

74. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद के लिए उत्पादन क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं कर पाया है। इसके अतिरिक्त, जांच की अवधि में विचाराधीन उत्पाद की लाभप्रदता में भारी गिरावट से घरेलू उद्योग द्वारा किया जा रहा विस्तार प्रभावित होने की संभावना है।

(छ) वृद्धि पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

75. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के निष्पादन का समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग में बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, लाभ और निवेश पर आय जैसे कीमत संबंधी मानदंडों तथा मात्रा के संदर्भ में जांच की अवधि में नकारात्मक वृद्धि हुई है। जांच की अवधि के दौरान इन मानदंडों में वृद्धि में गिरावट पर विचार करते हुए इन मानदंडों पर पाटित आयातों के संभावित प्रभाव काफी नकारात्मक हो सकते हैं।

विवरण	यूओएम	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई
उत्पादन	%	-	69.78	(7.16)	(7.37)
घरेलू बिक्री मात्रा	%	-	127.74	(8.36)	(8.21)
बिक्री की लागत	%	-	(8.33)	2.14	4.21
बिक्री की कीमत	%	-	(1.06)	(1.53)	2.35
प्रति यूनिट लाभ/हानि	%	-	(1,109.59)	(52.30)	(52.90)
निवेश पर आय	%	-	34.55%	-20.67%	-7.73%
क्षमता उपयोग	%	-	27.35%	-4.76%	-4.56%
बाजार हिस्सा	%	-	15.52%	-1.23%	-4.72%

(ज) पाटन की मात्रा तथा पाटन मार्जिन

76. संबद्ध आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से काफी अधिक है।

(झ) कीमतें प्रभावित करने वाले कारक

77. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा और कीमतों तथा घरेलू कीमतों में प्रवृत्तियों की जांच यह दर्शाती है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों की भारी मात्रा में मौजूदगी से घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित हुई हैं जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को लाभ का ह्रास हुआ है।

(ञ) क्षति संबंधी निष्कर्ष

78. घरेलू उद्योग को क्षति से संबंधित सत्यापित सूचना और विश्लेषण यह दर्शाता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग का निष्पादन 2014-15 में सुधरा था, तथापि, उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, लाभ, नकद लाभ तथा निवेश पर आय जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण आर्थिक मानदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन उसके बाद काफी घटा और जांच की अवधि तक कम होता रहा। चीन से आयातों में वृद्धि हुई और बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों की वे कटौती कर रहे थे। आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों पर काफी कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव पड़ रहा था। घरेलू उद्योग को हुई क्षति केवल काफी नहीं है, बल्कि वास्तविक भी है।

(ट) क्षति एवं क्षति मार्जिन की मात्रा

79. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध सामानों की क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध देश से निर्यातों के पहुँच मूल्य से करने पर वह जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक क्षति मार्जिन दर्शाती है।

क्षति मार्जिन

उत्पादन	निर्यातक	क्षति रहित कीमत अमेरिकी डॉलर/मी. टन	पहुँच कीमत अमेरिकी डॉलर/मी. टन	क्षति मार्जिन अमेरिकी डॉलर/मी. टन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज %
मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान)	मैसर्स चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान)	***	***	***	***	5-15%
* अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि.	* अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि.	***	***	***	***	10-20%
अन्य सभी		***	***	***	***	25-35%

* पूर्व में मैसर्स चिञ्जोऊ लोंघुआ फार्माकेम कं. लि. के रूप में ज्ञात

(ठ) कारणात्मक संपर्क और अन्य कारक

80. पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, प्राधिकारी को अन्य बातों के साथ-साथ उन पाटित आयातों की बजाए किसी ज्ञात कारक की भी जांच करना अपेक्षित है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रहे हैं ताकि इन अन्य कारकों से हुई क्षति पाटित आयातों के कारण न हो।
81. इस बात की जांच की गई कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध निम्नलिखित अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

(i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमतें

82. आयात आंकड़ों की जांच यह दर्शाती है कि अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के कोई आयात नहीं हुए थे। अतः अन्य स्रोतों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

(ii) मांग में संकुचन और/अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन

83. घरेलू बाजार में उत्पाद के लिए मांग ने क्षति की अवधि में वृद्धि दर्शाई है। अतः संबद्ध सामानों की मांग से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

(iii) व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटियाँ और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

84. जांच ने यह नहीं दर्शाया है कि प्रतिस्पर्धा की स्थितियाँ तथा व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटियाँ घरेलू उद्योग को तथाकथित क्षति के लिए उत्तरदायी हैं।

(iv) प्रौद्योगिकी में विकास

85. की गई जांच प्रौद्योगिकी में कोई भारी परिवर्तन नहीं दर्शाती जिससे घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रभावित हो सकता हो।

(v) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

86. याचिकाकर्ता ने क्षति की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। तथापि, घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू प्रचालनों के कारण है और पूर्व खंड में क्षति विश्लेषण उसकी घरेलू बिक्री के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन पर आधारित है। घरेलू एवं निर्यात बाजारों में कीमतें और लाभप्रदता को घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग को क्षति का मूल्यांकन करने के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी द्वारा अलग-अलग किया गया है।

(vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

87. घरेलू उद्योग की उत्पादकता उत्पादन में गिरावट के कारण कम हुई है।

ज.1 कारणात्मक संपर्क स्थापित करने वाले कारक

88. क्षति की अवधि में घरेलू उद्योग के निष्पादन का विश्लेषण यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग का निष्पादन संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण कम हुआ है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संपर्क निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध किया जाता है:

- क. आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है। क्षति की अवधि में आयातों की मात्रा बढ़ी है।
- ख. देश में पाटित आयातों की मौजूदगी से घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास हुआ।
- ग. संबद्ध आयातों से घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए उत्पादों को कम कीमत पर बेचा गया।
- घ. लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय तथा नकद लाभ में ह्रास सीधे ही पाटित आयातों के परिणामस्वरूप है।
- ङ. काफी कीमत कटौती के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग मांग में वृद्धि के अनुपात में नहीं बढ़ा है।
- च. जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की वृद्धि कई कीमत एवं मात्रा संबंधी आर्थिक मानदंडों के संदर्भ में नकारात्मक रही।

झ. प्रकटन पश्चात टिप्पणियाँ

89. संबद्ध पक्षकारों से प्रकटन पश्चात अनुरोध प्राप्त हुए हैं। उनमें उठाए गए मुद्दे पहले ही जांच के दौरान पूर्व में उठाए गए हैं और संगत पैराग्राफों में उनका समाधान भी कर दिया गया है। तथापि, स्पष्टता के लिए संबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की निम्नलिखित रूप में जांच की जा रही है:

झ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

90. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- क. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड आयातित उत्पाद की समान वस्तु है।
- ख. याचिकाकर्ता एक पात्र घरेलू उद्योग है।
- ग. चीन द्वारा पीले फॉस्फोरस पर निर्यात शुल्क लगाया जाना उसके मूल्यवर्द्धित उत्पादों का संवर्द्धन करना है। यहां तक कि यदि कच्ची सामग्री की कीमत पर निर्यात शुल्क की मात्रा तक छूट दी जाती है (जो कि एक आवश्यकता नहीं है) तो आंकड़े काफी पाटन को दर्शाएंगे। पाटन की अनुमति देकर इसको प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए।
- घ. पीले फॉस्फोरस को उसकी कच्ची सामग्री और परिष्कृत उत्पाद की खतरनाक प्रकृति, उसकी सार संभाल, पैकिंग और अत्यधिक सावधानी की अपेक्षा वाले परिवहन के कारण फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड में बदलने के लिए 30 प्रतिशत तक के काफी मूल्यवर्द्धन की आवश्यकता होती है।
- ङ. चीनी निर्यातकों और घरेलू उद्योग द्वारा इस प्रक्रिया में प्रयुक्त तथा खरीदी गई ऑक्सीजन की पद्धति में अंतर के कारण उत्पादन की लागत में कोई खास अंतर नहीं है।
- च. चीनी निर्यातक घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त ड्रमों की लागत की तुलना में पीले फॉस्फोरस के परिवहन के कारण टैंकरों पर दोहरा भाड़ा लगाएंगे।
- छ. विगत में पीले फॉस्फोरस के घरेलू उद्योग को संरक्षण न दिए जाने से देश में पीले फॉस्फोरस का उत्पादन पूर्णतः बंद हो गया।
- ज. पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है क्योंकि पाटित आयातों की मात्रा और बाजार हिस्सा इतना अधिक था कि घरेलू उद्योग देश में मांग के बावजूद बिक्री, उत्पादन और अपनी मौजूदा क्षमता का उपयोग नहीं कर पाया।
- झ. पाटित आयातों से घरेलू कीमतों की कटौती हुई और घरेलू बाजार में कीमतों का दबाव बना जिससे लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय में गिरावट आई।
- ञ. पाटित आयातों के परिणामस्वरूप काफी कम कीमत पर बिक्री हुई।
- ट. संबद्ध देश से प्रत्येक उत्तरदाता एवं उत्तर न देने वाले निर्यातक के संबंध में पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन काफी सकारात्मक है।
- ठ. एनआईपी की एनएसआर के साथ तुलना समान स्तर पर होनी चाहिए अर्थात् जिन सभी खर्चें एनआईपी में अनुमति नहीं दी गई है, उनको एनएसआर से कम किया जाना चाहिए।
- ड. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से प्रयोक्ता उद्योग पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- ढ. याचिकाकर्ता ने काफी निवेश किए हैं और यहां तक कि संबद्ध सामानों की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए योजना बनाई है।
- ण. चूंकि, पीले फॉस्फोरस की कीमतों में उतार-चढ़ाव आता रहता है, अतः अमेरिकी डॉलर में तथा निर्धारित रूप में अथवा यथा मूल्य रूप में व्यक्त पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश किए जाने की आवश्यकता है।

अ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

91. विभिन्न विरोधी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों का सार निम्नलिखित है:

- क. कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री असंगत हैं। यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली क्षति रहित कीमत से अधिक है तथा घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो रही है।
- ख. लगाई गई पूंजी पर 22 प्रतिशत आय मानना प्राधिकारी की सतत परिपाटी तर्कहीन है और उसे उपयुक्त नहीं माना जा सकता, जबकि कानून में पूंजी पर पर्याप्त आय अपेक्षित है। ब्रिजस्टोन टायर मैन्युफैक्चरिंग और अन्य बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी तथा हियोसांग कारपोरेशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामलों में सेसेट के नियम का संदर्भ लें।
- ग. उपयुक्त आय के निर्धारण में यूरोपीय संघ द्वारा अपनाई गई परिपाटी लाभ के लक्ष्य पर आधारित है जो कि उस अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किया गया लाभ मार्जिन है जिसमें पाटित और/अथवा सब्सिडी वाले आयातों से कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं हुआ। टी-210/95 यूरोपियन फर्टिलाइजर मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन (ईएफएमए) बनाम काउंसिल (1999) ईसीआर-II-3291 का संदर्भ लें।
- घ. प्राधिकारी द्वारा कच्ची सामग्री के प्रभाव पर विचार नहीं किया गया है। भारत की पीले फॉस्फोरस की आयात कीमत के कारण चीन की अपेक्षा अधिक कच्ची सामग्री लागत है। चीन से 20 प्रतिशत निर्यात शुल्क है। वियतनाम और कजाखिस्तान अपनी दरों को तदनुसार समायोजित करते हैं।
- ङ. भारत परिवहन (समुद्री भाड़ा) और पीले फॉस्फोरस की पैकिंग के निमित्त अतिरिक्त लागत भी खर्च करता है क्योंकि भारत में पीले फॉस्फोरस का कोई उत्पादक नहीं है जो कि चीन के फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड से भारतीय फॉस्फोरस पेंटॉक्साइड को अधिक खर्चीला बनाता है।
- च. ऐसा कोई पाटन नहीं है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रहा हो। पाटनरोधी उपाय लागू करना दीर्घावधि में तथा घरेलू एवं निचले उद्योगों के समग्र हितों में असंगत है।
- छ. चूंकि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं है, अतः प्राधिकारी को पाटनरोधी उपाय लागू नहीं करने चाहिए। यदि प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क लगाना महसूस करते हैं तो प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क के स्वरूप के रूप में संदर्भ कीमत निर्धारित करने पर विचार कर सकते हैं।

झ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

92. यह नोट किया जाता है कि प्रकटन पश्चात स्तर पर उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त संगत पैराग्राफों में पहले ही जांच कर ली गई है, तथापि, अनुरोधों की स्पष्टता के लिए उनका समाधान निम्नलिखित रूप में किया जाता है:

- क. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली क्षति रहित कीमत से अधिक है और घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो रही है, प्राधिकारी ने लागत संबंधी सूचना तथा क्षति के दावों का पूर्ण सत्यापन करने के बाद क्षति का निर्धारण किया है।
- ख. लगाई गई पूंजी पर 22 प्रतिशत तक आय के प्रावधान के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह प्राधिकारी की सतत परिपाटी रही है कि वे 22 प्रतिशत पर लगाई गई पूंजी पर आय प्रदान करें और उसी को इस मामले में भी अपनाया गया है।
- ग. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि प्राधिकारी द्वारा कच्ची सामग्री के प्रभाव पर विचार नहीं किया गया है, यहां यह नोट किया जाता है कि क्षति रहित कीमत (एनआईपी) घरेलू उद्योग द्वारा सामान्यतया स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के आधार पर प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और उसे निर्मित करने तथा उसकी बिक्री करने की लागत पर आधारित है। निर्यातक सदस्य देश ने उत्पादन लागत क्षति रहित कीमत के परिकलन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए अवास्तविक है।
- घ. घरेलू उद्योग के इस तर्क के संबंध में कि चीनी निर्यातक घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त ड्रमों की लागत की तुलना में पीले फॉस्फोरस के परिवहन के निमित्त टैंकरों पर दोहरा भाड़े की लागत लगाते हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह मुद्दा संगत नहीं है क्योंकि प्राधिकारी ने उत्तरदाता निर्यातकों के सामान्य मूल्य के लिए दावे को रद्द कर दिया है और सामान्य मूल्य के परिकलन के लिए निर्मित लागत की पद्धति अपनाई है। इसके अतिरिक्त, जहां तक पीले फॉस्फोरस के लिए घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई लागत का संबंध है, उसका लेखा बहियों के अनुसार सत्यापन किया गया है और उसे क्षति रहित कीमत के परिकलन के लिए विचार में लाया गया है।

ञ. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

93. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपाय लगाकर कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपाय लगाने से पाटन की परिपाटियों से प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग की गिरावट रुकेगी और संबद्ध सामानों के लिए ग्राहकों को व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी। पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्य रूप में पाटन की अनुचित व्यापारिक परिपाटियों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में एक खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति स्थापित की जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। अतः पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से ग्राहकों को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लगाए जाने से किसी भी तरह संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसीलिए ग्राहकों को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। ग्राहक आपूर्ति के दो या अधिक स्रोत बनाए रख सकते हैं।

ट. निष्कर्ष एवं सिफारिश

94. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों तथा उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने के बाद और रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- क. विचाराधीन उत्पाद संबद्ध देश से सामान्य मूल्य से कम पर निर्यात किया गया है।
- ख. घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से पाटित संबद्ध आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

95. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच शुरू की गई थी और वह सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित की गई थी। निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संपर्क के पहलुओं के संबंध में सूचना प्रदान करने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया था। पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, पाटन, क्षति और उसके कारणात्मक संपर्क की जांच शुरू करने और जांच करने पर तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति तथा स्थापित सकारात्मक पाटन मार्जिन को देखते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं क्षति को रोकने के लिए पाटनरोधी शुल्क आवश्यक है।

96. कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी कम "पाटन के मार्जिन" और "क्षति के मार्जिन" के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, प्राधिकारी संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों पर केंद्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से पांच (5) वर्षों की अवधि के लिए निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं जो संबद्ध सामानों के पहुँच मूल्य और नीचे दी गई शुल्क तालिका के कॉलम 8 में दर्शाई गई राशि के बीच के अंतर के रूप में होगी, बशर्ते कि पहुँच मूल्य कॉलम 8 में दर्शाए गए मूल्य से कम हो।

शुल्क तालिका

क्रम सं.	उप शीर्ष/ टैरिफ मद	वस्तुओं का विवरण	मूल देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि अमेरिकी डॉलर/मी. टन
1	2	3	4	5	6	7	8
1	*28091000	फॉस्फोरस पेंटाक्साइड	चीन जन गण	चीन जन गण	चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान)	चांगझोऊ सिटी किशुयान फाइन केमिकल्स कं. लि. (किशुयान)	1685.42
2	28091000	फॉस्फोरस पेंटाक्साइड	चीन जन गण	चीन जन गण	** अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि.	** अनहुई लोंघुआ केमिकल इंडस्ट्री कंपनी लि.	1685.42
3	28091000	फॉस्फोरस पेंटाक्साइड	चीन जन गण	चीन जन गण	उपर्युक्त (1) और (2) को छोड़कर कोई अन्य		1685.42
4	28091000	फॉस्फोरस पेंटाक्साइड	चीन जन गण	चीन जन गण	कोई अन्य	चीन	1685.42
5	28091000	फॉस्फोरस पेंटाक्साइड	चीन जन गण	चीन जन गण	चीन	कोई अन्य	1685.42

* सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और इस जांच के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

** पूर्व में मैसर्स चिझोऊ लोंघुआ फार्माकेम कं. लि. के रूप में ज्ञात

97. इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए आयातों का पहुँच मूल्य मूल्यांकन योग्य मूल्य होगा, जैसा कि सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत सीमा शुल्क द्वारा निर्धारित किया गया है तथा उपर्युक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के तहत शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्क के सभी शुल्क शामिल हैं।

ठ. आगे की प्रक्रिया

98. इस अंतिम जांच परिणाम की अधिसूचना के कारण होने वाली केंद्र सरकार के आदेश के विरुद्ध कोई अपील सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th March, 2018

FINAL FINDINGS

Case No OI 17/2017

Subject: Anti-dumping investigation concerning imports of 'Phosphorus Pentoxide' originating in or exported from China PR.

F. No. 14/47/2016-DGAD: Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof, M/s Sandhya Dyes & Chemicals Pvt. Limited (herein after referred to as the applicant/domestic industry) had filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of Phosphorus Pentoxide (hereinafter referred to as the subject goods or P₂O₅),

originating in or exported from China PR (herein after also referred to as subject country) and requested for initiation of an investigation for levy of anti-dumping duties on the subject goods.

2. AND WHEREAS, the Authority, on the basis of sufficient *prima facie* evidence of dumping, injury and causal link submitted by the applicant, issued a public notice dated 17th March 2017, in accordance with Rule 6(1) of the Rules, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. PROCEDURE

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation:

- i. In terms of Rule 5(5), the Authority notified the Embassy of the subject country in India about the receipt of the application from the domestic industry requesting for initiation of anti-dumping investigation.
- ii. The Authority issued a Notification dated 17th March, 2017, published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods.
- iii. The Embassy of the subject country in New Delhi was also informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2).
- iv. The Designated Authority sent copy of initiation notification to the Embassy of the subject country in India, known exporters from the subject country, known importers in India and other interested parties, as per the information available with it, as well as the domestic industry. Parties to this investigation were requested to file questionnaire responses and make their views known in writing within 40 days of the initiation notification in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules.
- v. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters, known importers and to the Embassy of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules.
- vi. The Authority sent exporter's questionnaire to the following known producers/exporters in the subject country, whose details were made available by the applicant, to elicit relevant information in accordance with Rule 6(4) of the Rules.
 - a. Asambly Chemicals Company Ltd.
 - b. Changzhou City Qishuyan Fine Chemical Co. Ltd.
 - c. Wintersun Color Co. Ltd.
 - d. Skyfly Industry Limited
 - e. High Hope Int'l Group
 - f. Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.
 - g. Zhejiang Medicines & Health products Import & Export Co. Ltd.
 - h. Qingdao Wisdom International Trading Co. Ltd.
 - i. Zhejiang Sa-Chem Import & Export Co.
 - j. Avai Chemicals Co. Ltd.
- vii. The Embassy of the subject country in India was also requested to advise the exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to the Embassy of China along with the names and addresses of the known producers/exporters from the subject country.
- viii. The following producers/exporters, exporting the subject goods originating in or exported from the subject country, have filed exporter's questionnaire response:
 - a. Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd.
 - b. Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.
- ix. Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. has also made submissions on initiation.
- x. M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd. has informed that w.e.f. 01 August 2017 the name of the company has been changed. Hereafter it is to be called 'Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.'. They

submitted the supporting documents evidencing the change in name formally. The Authority has accepted the change in name of Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd. and the said exporter is being referred to as “Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd”, in this final finding.

- xi. The Authority forwarded a copy of the Initiation Notification to the following known importers/users/user associations, whose names and addresses were made available to the authority, of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within the time limit prescribed by the Authority in accordance with the Rule 6 (4):
 - a. Sudarshan Chemical Industries Ltd.
 - b. Heubach Colour Pvt. Ltd.
 - c. Pidilite Industries Limited
 - d. Prasol Chemicals Limited
 - e. Lona Industries Limited
 - f. UPL Ltd.
 - g. Anshika Polysurf
- xii. Following importers/users of the subject goods have filed the importer’s questionnaire responses:
 - a. Meghmani LLP
 - b. Prasol Chemicals Ltd.
 - c. Sudarshan Chemical Industries Ltd.
- xiii. The Authority made available non-confidential version of the evidences presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6 (7). Submissions made by all interested parties have been taken into account in the present disclosure statement.
- xiv. The Period of Investigation for the purpose of the present investigation has been considered from July 2015 - September 2016 (15 Months). The injury investigation period has been considered as the period April 2013 - March 2014, April 2014 - March 2015, April 2015 - March 2016 and the POI. Further, since the investigation period is a period of 15 months, all figures/data for the POI have been considered by annualizing the same. Since the POI is more than 12 months, figures relating to POI have been shown on “annualized” basis in order to be comparable to the other years.
- xv. Additional/supplementary information was sought from the applicant and other interested parties to the extent deemed necessary. Verification of the data provided by the domestic industry and exporters/producers was conducted to the extent considered necessary for the purpose of the investigation. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon.
- xvi. The Non-injurious Price (NIP) is based on the cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-dumping Rules. It has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- xvii. Information provided by the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) on transaction-wise basis for the past three years, and the period of investigation has been adopted for determination of volume and value of imports of product concerned in India.
- xviii. The Authority held an oral hearing on 17th January, 2018 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6(6) of AD Rules. All the interested parties who presented their views orally at the time of hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally. The interested parties were also provided opportunity to offer rejoinder submissions to the submissions made by opposing interested parties. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority, in this final findings.
- xix. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide

sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

- XX. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded the findings on the basis of the facts available.
- XXi. Verification of domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of the present investigation.
- XXii. A spot verification was also conducted at the premises of the exporters between 24th to 29th July 2017.
- XXiii. A Disclosure Statement was issued on 19.02.2018 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 26.02.2018 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.
- XXiv. ‘***’ in this finding represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- XXV. The average exchange rate of 1US\$ = Rs 67.06 prevailing during the POI has been adopted by the Authority.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- 4. The product under consideration for the purpose of present investigation is “Phosphorus Pentoxide” or P_2O_5 .

B.1 Submissions made by the Domestic industry

- 5. The domestic industry has made following submissions with regard to the product under consideration:
 - i. The product under consideration is Phosphorus Pentoxide. P_2O_5 is also known as Diphosphorous Pentoxide, Phosphorus(V) oxide, Phosphoric anhydride, Tetraphosphorus decaoxide, Tetraphosphorus decoxide.
 - ii. Phosphorus pentoxide is a white, microcrystalline, light weight powder which is produced by the combustion of elemental phosphorus in an excess of oxygen.
 - iii. Phosphorus Pentoxide is used as a powerful desiccant and dehydrating agent and is a useful building block and reagent in the chemical industry.
 - iv. The product under consideration is classified under Chapter 28 of the Custom Tariff Act under subheading 28091000. The customs classification is indicative only and in no way it is binding upon the product scope.
 - v. With regard to the issues raised by other parties, the petitioner has contended that the petitioner has the latest and better technology both in terms of yield, ratio of conversion, design, compactness and environmentally friendly and less carbon footprint technology as they use liquid oxygen and not air.
 - vi. The petitioner buys liquid oxygen in tankers and not in cylinders. Extracting Oxygen from air will involve its own capital and running cost which is clearly saved in buying liquid oxygen in tankers.
 - vii. Production of Phosphorus Pentoxide involves a number of steps, melting of solid yellow phosphorus to liquid yellow phosphorus, transferring the liquid yellow phosphorus to the reactor without air contamination in closed atmosphere and reacting the yellow phosphorus with oxygen in reactor, condensation of Phosphorus Pentoxide vapours and collecting the Phosphorus pentoxide powder and packing the same without moisture contamination.
 - viii. Although production process from Yellow Phosphorus (YP) to Phosphorus Pentoxide involves only burning of Yellow Phosphorus in the presence of Oxygen, handling of Yellow Phosphorus in a safe and closed environment is a huge challenge and hazardous, as Yellow Phosphorus is highly flammable, dangerous and explosive.
 - ix. Further, P_2O_5 is also highly corrosive, reactive chemical and an explosion hazard. It requires use of explosion-proof electrical equipment and fittings and specially trained personnel to handle production and storage of P_2O_5 .
 - x. The manufacturing of P_2O_5 requires expert manpower especially skilled to handle the hazardous nature of production. Significant value addition, to the extent of 30%, is achieved on conversion of Yellow Phosphorus into P_2O_5 .
 - xi. The authority has recommended anti-dumping duty in cases of number of chemical and petrochemical products where the value addition carried out in India is either comparable or even significantly lower than the value addition that is being carried out by the domestic industry.

B.2 Submissions by other interested parties

6. The opposing interested parties have raised following issues with regard to the product under consideration:
- Production of P_2O_5 requires very basic activity of an oxidation reaction. The 30% value addition in conversion that is claimed, could be on account of expensive liquid oxygen, high manufacturing cost due to old technology and high packing cost.
 - China is manufacturing with advance technology where they extract oxygen from air whereas Sandhya Dyes and Chemical Pvt. Ltd. is using very old method of buying liquid oxygen in cylinders.
 - Use of skilled manpower is a very common practice in basic practices in chemical industry.

B.3 Examination by the Authority

7. The product under consideration in the present petition is “Phosphorus Pentoxide”, also referred to as P_2O_5 . The product is also known as Diphosphorous Pentoxide, Phosphorus(V) oxide, Phosphoric anhydride, Tetraphosphorus is decaoxide, Tetraphosphorus decoxide.
8. Phosphorus pentoxide is a white, microcrystalline, light weight powder which is produced by the combustion of elemental phosphorus in an excess of oxygen. Phosphorus pentoxide is the anhydride of orthophosphoric acid, H_3PO_4 . It is very hygroscopic and is converted by water to H_3PO_4 via intermediates.
9. Phosphorus Pentoxide is used as a powerful desiccant and dehydrating agent and is a useful building block and reagent in the chemical industry. Because of its strong hygroscopic properties, phosphorus pentoxide can be used as a drying agent. Phosphorus pentoxide finds application as a reagent for condensations in organic synthesis and polymerisation reactions; for production of phosphate esters with a mono/di ester content; manufacture of specialty sodium and ammonium phosphates, superphosphoric and polyphosphoric acids and for glass making.
10. The product under consideration is classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act. The PUC has a specific HS code 28091000 under Chapter 28 of Customs Tariff Act, 1975. The customs classification is indicative only and in no way it is binding upon the product scope.
11. With regard to the contention of other interested parties that 30% value addition could be on account of expensive liquid oxygen, high manufacturing cost due to old technology and high packing cost, the Authority notes that production of Phosphorus Pentoxide is hazardous, as Yellow Phosphorus is highly flammable, dangerous and explosive. Further, P_2O_5 is also highly corrosive, reactive chemical which requires use of explosion-proof electrical equipment and fittings and trained personnel to handle production and storage of P_2O_5 . The Authority also notes the Petitioner’s contention that manufacturing of P_2O_5 requires expert manpower especially skilled to handle the hazardous nature of production and significant value addition to the extent of 30% is required on Yellow Phosphorus.
12. With regard to the method of procurement of oxygen by Chinese producers and the domestic industry, it is noted whether the oxygen is extracted from air or bought as liquid oxygen both have its own cost. Further, difference in cost on account of liquid oxygen and oxygen extracted from air is not so significant as to cause any major variation in the total cost of the product under consideration.
13. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in subject goods produced by the Indian industry and subject goods imported into India from the subject country. Subject goods produced by the Indian industry and imported in India are comparable in terms of physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. They are technically and commercially substitutable. The consumers are using the domestically manufactured P_2O_5 and imported P_2O_5 interchangeably. The Authority holds that the product under consideration produced by the domestic industry is like article of the product imported from the subject country within the meaning of the Rule 2(d) of the Rules.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

14. The petition has been filed by M/s Sandhya Dyes & Chemicals Pvt. Ltd., who is a domestic producer of the product under consideration in India.

C.1 Submissions made by the Domestic industry

15. The petition has been filed by M/s. Sandhya Dyes & Chemicals Pvt. Ltd., Mumbai, as a domestic producer of the product under consideration. There are some other known producers of P_2O_5 in India.
16. The petitioner has claimed that there are no other existing known producers of Phosphorous Pentoxide in India, except the petitioner. There were two more producers, namely United Phosphorous Limited and Punjab Chemical & Crop Protection Limited, who were forced to close down the plant. While United Phosphorous Limited closed their plant

in 1990s; Punjab Chemical & Crop Protection Limited shut down plant in 2013, owing to their inability to stay competitive with the low prices of the dumped imported product from the subject country. Further, M/s Prasol Chemicals Limited had the capacity for producing Phosphorus Pentoxide, however, the company is now largely importing the subject goods.

17. The petitioner has imported small quantities of the subject goods from the subject country in the POI to fulfill the commitments made to customers. The imports made by the petitioner in relation to total imports, consumption and production are insignificant.

18. Petitioner is the sole producer of the subject goods in India in the POI. The petitioner satisfies the standing requirements and constitutes domestic industry within the meaning of the Anti-Dumping Rules.

C.2 Submissions by other interested parties

19. The interested parties have contended that the petitioner is not the only producer of the subject goods in India. They have contended that there are other Indian companies, namely, Punjab Chemical & Crop Protection Limited and United Phosphorous Limited, producing the product, as per the website information of these companies. Further, PCPL has stopped production because PCPL's technology is obsolete and they suffered losses on investments in South America.

20. The petitioner has imported the subject goods from subject country. As per Rule 2(b) the petitioner should not be treated as Domestic Industry.

C.3 Examination by the Authority

21. The present application was filed by M/s Sandhya Dyes & Chemicals Pvt. Ltd., who is a domestic producer of the product under consideration in India, seeking imposition of anti-dumping duty on imports of Phosphorus Pentoxide from the subject country.

22. As per information on record and investigation conducted, following are the other known producers of the product under consideration, besides the petitioner, namely:

- a. United Phosphorous Limited
- b. Punjab Chemical & Crop Protection Limited

23. In the course of investigations, Punjab Chemical & Crop Protection Limited, while extending support to the petitioner stated that they stopped production of the subject goods due to dumping. However, United Phosphorus Limited has not shown any interest in the present investigations. Further, information on record shows that M/s Prasol Chemicals Limited is regularly importing the subject goods and have submitted Importer Questionnaire response as an interested party to the investigation. Further, regarding the issues of PCPL's technology and losses in investments, the Authority notes that technology of PCPL is not relevant as the domestic industry is Sandhya Dyes & Chemicals Pvt. Ltd.

24. With regard to the contention of the interested parties that the petitioner has imported the subject goods and is not eligible to be considered as domestic industry, it is noted that the petitioner has imported very small quantities of the subject goods from the subject country in the POI to fulfill the commitments made to customers as there was a temporary shortfall in the production. It is seen that the imports made by the petitioner are 1% of total imports in the POI, less than 1% of the consumption in India and nearly 2% of the production in the country in the POI. The petitioner is primarily a producer of the subject goods and continues to focus on domestic production. The Petitioner has given sufficient evidence in support of their claim to expand their capacity significantly within a period of 6 months. Having regard to the facts of the case, the Authority considers that the petitioner constitutes eligible domestic industry within the meaning of Rule 2 (b) of the Anti-Dumping Rules and satisfies the standing criteria in terms of Rule 5 (3).

D. CONFIDENTIALITY

D.1. Submissions made by the Domestic industry

25. Submissions made by the domestic industry in this regard are as follows:

- a. The respondents have claimed excessive confidentiality by not providing information in the public version of their questionnaire responses. The same has been done to the extent that not even properly indexed information has been provided.
- b. The information furnished under Appendices 1-9 are clearly not in the format when 'strict adherence' to the proforma has been specifically sought. In the absence of even properly indexed information, the Domestic Industry is left handicapped to offer its comments on such deficient responses.
- c. The exporters have suppressed vital information such as names of shareholders, production process and sources of procurement of raw material and utilities, use of captive inputs and affiliation.

D.2. Submissions made by the other interested parties

26. The other interested parties have argued that the petitioner has claimed excessive confidentiality in the costing

information provided in the petition.

D.3. Examination by the Authority

27. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:

“7. Confidential information- (1) Notwithstanding anything contained in sub rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.”

28. Information provided by the domestic industry and the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not kept it open in public file.

E. MARKET ECONOMY TREATMENT (MET), NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

E.1 Submissions made by the Domestic industry

29. Submissions made by the domestic industry with regard to MET, normal value, export price and dumping margin during the course of the investigation and considered relevant by the Authority are as follows:

- a. Chizhou Longhua is a producer of the subject goods. Exports to India have been made through third party distributors to Indian customers. Response by Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd. is incomplete as there is no response from the associated exporters, who have exported to India have not responded. Complete sales channel is missing. The response should, therefore, be rejected outright.
- b. Changzhou City Qishuyan Fine Chemical Co. has stated that all inputs required for manufacture of the product under consideration are purchased from unrelated suppliers. The major raw material required for production of the subject goods is Yellow Phosphorus, which is produced by the company. The questionnaire response of Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Ltd. may be rejected on this ground alone.
- c. One of the provisions of Accession protocol has expired on 11th December, 2016. The Designated Authority should proceed with present investigation considering Chinese producers as producers operating in non-market economy conditions due to reasons given below.
- d. The investigation period considered by the Authority in the present case is July 2015 to September 2016 (15 months). The injury investigation period has been considered as 2013-14, 2014-15, 2015-16 and the POI.
- e. In the present case, the POI was July, 2015 to September, 2016 (15 months).
- f. The purpose of fixation of POI is to consider a period when the existence of dumping causing injury is claimed and established.
- g. The Chinese producers are required to be treated as non-market economy companies for the reason that the costs and prices in China do not reasonably reflect the market forces. Para 8 to Annexure-I specifies the parameters which should be considered for grant of market economy status.
- h. Since Chinese companies have been denied market economy status for the reasons mentioned in Para 8 of Annexure-I till December, 2016, petitioner submits that the Chinese producers are required to be treated as non-market economy companies till such time the investigation period includes the period specified in Accession protocol.
- i. Chinese producers are required to be treated as companies operating under non-market economy environment and the Authority may proceed to determine the normal value on the basis of Para 7 of Annexure-I.
- j. Normal value could not be determined on the basis of price of like article in an appropriate market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. The petitioner has claimed consideration of normal value on the basis of cost of production in India duly adjusted.

- k. Further, since the prices of raw material and the subject goods are subject to significant fluctuations; determination of normal value, export price and dumping margin should be done on month-wise basis.
- l. The dumping margin from China is not only significant, but also substantial, thus establishing existence of significant dumping of the product under consideration in India. The import volume of China has remained significant throughout the present injury period.

E.2 Submissions by exporters, importers and other interested parties

30. The responding exporter, M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd., has filed submissions claiming that India must recognize China's full market economy status and legally stop using the "surrogate country" approach in anti-dumping duty investigations against China. After December 11, 2016, normal value for imports from China must be determined on the basis of Chinese prices and costs and China should be accorded Market Economy Treatment.

31. The exporter has claimed that normal value for imports from China must be determined on the basis of price and cost data provided by Exporter Company rather than applying analogue country data.

E.3 Examination by the Authority

E.3.1 Examination of Market Economy Claims

32. With regard to the submissions made by the petitioner, it is noted that the commitments under para 15(a) (i) of the Accession Protocol signed by China with WTO requires that the producers under investigation should clearly show that market economy conditions prevail in the industry producing the like product with regard to the manufacture, production and sale of that product. In event of this being substantiated, the importing WTO member shall use Chinese prices or costs for the industry under investigation in determining price comparability. Further Article 2.2.1.1 of WTO and AD Rules of India requires that the financial records of producer/exporter reasonably reflect the production costs. Therefore, information and supportive evidence thereof in respect of the following is required to be provided.

- a. Decisions in regard to price, cost, inputs including raw material, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signal reflecting supply and demand and without significant State interference and whether cost of major inputs substantially reflect market value.
- b. Production costs and financial position does not suffer from any distortion.
- c. The producer/exporters are subject to bankruptcy and property law which guarantees legal certainty and stability for the operation of the firms.
- d. Exchange rate conversions are carried out at the market rate.

E.3.2 Determination of Normal Value and Export Price for producers and exporters in China PR

33. The Authority notes that the following producers/exporters from China PR have filed exporter questionnaire response:

- a. M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd.
- b. M/s Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd. (earlier known as M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.

34. While M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. have not submitted supplementary questionnaire claiming Market Economy Treatment, M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd. had submitted supplementary questionnaire on Market Economy Treatment. However, they have withdrawn their claim for Market Economy Treatment during the course of investigations.

35. The Authority appreciates the participation in and cooperation of the two producer/ exporters from China PR. Since of these two producer/ exporters, one of them did not claim the market economy status and the other withdrew it during the course of the investigation. This entailed the construction of a normal value for these two exporters by the Authority. In doing so full care has been taken to approximate the prices and costs as close as possible to that of what the two producer/ exporters actually incur in their home markets. The Authority notes that the producer/ exporters in China PR have a natural advantage in that the basic raw material contributing to almost 70% of the cost for manufacture of the subject goods is 'yellow phosphorus'. Yellow phosphorus is mined and produced primarily in China, Kazakhstan and Vietnam. Further, it is noted that the Government of China PR levies export duty on export of yellow phosphorus from that country. This on one hand provides the Chinese producers using it a cost advantage while on the other it encourages the other countries producing yellow phosphorus from pricing it internationally close to the prices obtained from China. Thus, the manufacturers in India importing this raw material from any source face a cost disadvantage. Nonetheless, in constructing the normal value for the subject goods manufactured in China PR, the Authority has provided a deduction for the export duty from the landed price of yellow phosphorus in India, as a producer based in China does not incur it, along with the freight, ocean insurance and other incidentals using the best available information regarding the cost of

raw materials, optimum consumption norms of the domestic industry for raw materials and utilities, conversion cost, interest, SGA, etc. including thereupon reasonable profit.

36. In constructing the normal value, the Authority noted that the subject goods are sensitive to the atmosphere and therefore packing is an important component of the production. It is also noted that the subject good after production is packed either in Plastic drums, which are more expensive or in plastic-lined paper bags. Given the price differential between the two types of packaging popularly used, the Normal value is thus considered as *** USD/MT when packed in 'Plastic-lined' paper bags and *** USD/MT when packed in Plastic drums.

E.3.3 Determination of Export Price for Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Qishuyan)

37. The Authority notes that Qishuyan has sold *** MT of the subject goods to India, packed in 'Plastic-lined' paper bags and *** MTs of the subject good packed in Plastic Drums. The weighted average CIF Price is determined as ***USD/MT. The Authority allowed adjustments on account of ocean freight, marine insurance, inland freight, port handling charges, bank charges, credit cost, non-refundable VAT etc. to determine net export price at ex-factory level. The ex-factory export price is determined as *** USD/MT on a trade weighted basis.

E.3.4 Determination of Export Price for Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd. (earlier known as M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.)

38. The Authority notes that Longhua has sold *** MT of the subject goods to India directly. The weighted average CIF Price is determined as *** USD/MT. The Authority allowed adjustments on account of ocean freight, marine insurance, inland freight, port handling charges, bank charges, etc., to determine net export price at ex-factory level. The ex-factory export price is determined as *** USD/MT.

E.3.5 Determination of Normal Value and Export Price for Non-cooperating producers and exporters in China

39. For the other producers/exporters of China, Normal value and the export value has been considered based on the facts available. Based on this the dumping margin is indicated in the relevant table.

E.3.6 Calculation of Dumping Margin

40. Comparing the aforesaid normal values and export prices as determined above, the dumping margin determined for the subject country during POI are as follows:

Dumping Margin

Producer	Exporter	Normal Value US\$ / MT	Export Price US\$ / MT	Dumping Margin US\$ / MT	Dumping Margin %	Dumping Margin Range %
M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Qishuyan)	M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Qishuyan)	***	***	***	***	20-30
*Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.	*Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.	***	***	***	***	25-35
All Others		***	***	***	***	45-55

**Earlier known as M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.*

41. It is seen that the dumping margins are more than the *de minimis* limits prescribed under the Rules in respect of exports made from each of the cooperating producers/ exporters and non-cooperative producers/ exporters from the subject country.

F. DETERMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

F.1 Submissions made by the domestic industry

42. The domestic industry, in its submissions, has *inter alia* argued as under:

- Significant volume of imports had entered the country at dumped prices in the injury period. Imports declined marginally in 2014-15 and thereafter in 2015-16. Imports however increased significantly in the POI. Imports in

POI showed 16% increase as compared to preceding year and 7% increase as compared to base year; whereas, demand for the product showed only 8% increase as compared to preceding year.

- b) Imports were significant in relation to production and consumption in India. Whereas imports in POI increased by 16% as compared to preceding year, the domestic industry lost sales by 8% as compared to preceding year.
- c) Market share of imports declined in 2014-15 as compared to preceding year. However, thereafter, market share of dumped imports has been consistently increasing and that of domestic industry has been consistently falling.
- d) Subject imports hold significant and majority market share despite domestic industry having capacity to cater significant portion of the domestic demand.
- e) The subject imports are undercutting the domestic prices significantly. Import prices are creating pressure on domestic prices, which resulted in reduction of profits in 2015-16 and thereafter in POI.
- f) There was continuous decline in import prices. The decline was more significant in the POI.
- g) Production, capacity utilization and sales of the domestic industry increased in 2014-15 as compared to preceding year. However, production, sales and capacity utilization declined thereafter in 2015-16 and then further in POI. While petitioner suffered 14% loss of production in POI as compared to 2014-15, it suffered 16% loss of sales during the same period. Capacity utilization of the domestic industry is much below the achievable levels in spite of significant demand in the country.
- h) Considering significant and rising demand, having achieved a level of production in 2014-15, the production, sales and capacity utilization should have at the least improved thereafter, and not declined, as in fact happened with the domestic industry. While increase in production and sales with the increasing demand is a natural business situation, decline in production and sales after increase in 2014-15 is at the least much abnormal and shows distorted business performance. Further, while production declined by 16% between 2014-15 and POI, the imports increased by 12%.
- i) Average inventory with the domestic industry once again increased in the POI.
- j) Performance of the domestic industry in terms of profits, profit before interest, return on investments and cash profits improved in 2014-15 and declined significantly thereafter. Profits in POI were mere 30% of the profits in 2014-15. ROI declined more rapidly and were mere 23% of the ROI in 2014-15.
- k) In spite of sufficient capacity and employment level, the domestic industry could not achieve the desired results in terms of volume as well as price parameters such as production, sales, capacity utilization, profits, cash profits, return on investment and market share.
- l) The petitioner plans to expand capacity and has also taken steps to improve the efficiency of the existing plant to increase production.
- m) In view of huge volume of dumped imports, the petitioner has no choice but to export the product to remain viable.
- n) As the petitioner was unable to utilize the capacity in view of dumping of P_2O_5 in India, the petitioner explored options for production of downstream products to increase production of the product under consideration. The petitioner started some trial production of Poly Phosphoric acid (PPA) in the POI (around July 2016) and just 8MT of P_2O_5 was used captively.
- o) The dumping margin is not only more than *de minimis* but also substantial. Injury margin is also positive and quite significant.
- p) Examination of the economic situation of the domestic industry within the injury period rather than an end-point to end-point analysis shows material injury caused to the domestic industry by dumped imports.
- q) The domestic industry has requested to impose anti-dumping duty in the form of fixed duties.
- r) Yellow Phosphorus being highly flammable and reactive, transportation requires extreme caution. Tanker load transportation is more expensive than packing in drums. Further transportation by tanker involves two-way freight owing to the hazardous nature of Yellow Phosphorus.
- s) Production of P_2O_5 from yellow phosphorus involves significant value addition as both the raw material and product under consideration require extreme precaution.
- t) The petitioner has the latest and better technology both in terms of yield, ratio of conversion, design, compactness and environmentally friendly and less carbon footprint technology as they use liquid oxygen and not air. In the case of China, extracting oxygen from air will involve its own capital and running cost which is clearly saved in buying liquid oxygen in tankers. Further, as the balance 79% of air is not taking part in reaction, this huge volume of other gases, containing P_2O_5 vapors, has to be scrubbed off, putting more load on

the scrubber.

- u) The petitioner also uses the heat of reaction for their captive consumption that is melting of phosphorus drums and lines for transfer.
- v) P_2O_5 is taking part in the reaction and Dilute Phosphoric acid comes out as a by-product. Nearly 30% cost of P_2O_5 is recovered as by-product value.
- w) The domestic industry's product has insignificant value for the user industry. Imposition of ADD would not have any major impact on the cost of downstream product.

F.2 Submissions made by the producers/exporters/other Interested Parties

43. The exporters, importers and other interested parties to this investigation have made the following submissions regarding the injury and causal link:

- a) In India P_2O_5 required is around 4,000MT whereas India is producing 2,000MT so it shows huge short fall. End users are not able to get sufficient quantities leaving them no choice but to import.
- b) The capacity of the petitioner is insufficient. Further, they export 600-800 MT and P_2O_5 is also captively consumed for the production of Poly Phosphoric Acid (PPA), leaving a very small quantity for local users.
- c) 2.5 kg of P_2O_5 is used to make 1 kg of our finished pigment product. Hence any increase in P_2O_5 price will impact our product price significantly.
- d) Imposition of ADD would lead to monopolistic conditions in the market, as the petitioner's capacity is limited. This will result in issues of supply continuity and pricing of the product.
- e) The petitioner's share capital is mere Rs.25 lacs and the product value in Indian demand is only Rs.50-60 crores. As against this, the user industry has turnover of Rs.500-1,000 crores.
- f) Petitioner's product is not competitive as petitioner is importing yellow phosphorus and making P_2O_5 . Yellow phosphorus is the main raw material for P_2O_5 which is imported from China and Vietnam. With 20% export duty on yellow phosphorus from China, Vietnam prices to India are also at par to those increased prices. The import prices of yellow phosphorus are higher as the exporting countries are fixing their prices on the basis of Chinese yellow phosphorus prices which are higher due to export duty in China.
- g) Chinese P_2O_5 manufacturers are buying yellow phosphorus, which is raw material, in tanker load whereas Indian manufacturer is importing in drums which increases their raw material cost and reduces their competitiveness.
- h) China is manufacturing with advance technology where they extract oxygen from air whereas petitioner is using very old method of buying liquid oxygen in cylinders.
- i) Chinese exporters are using heat generated in production process for steam generation which is sold/ used for other products whereas no such use is done by the Indian producers.
- j) Petitioner has compared the injury parameters from 2014-15, whereas comparison should be made from base year, 2013-14. Comparison from base year would show improvement in respect of all parameters, volume as well as price.
- k) The capital employed has increased from 100 to 356 index points during POI as compared to the base year 2013-14. However, there is no increase in installed capacity.
- l) The Authority has terminated those cases wherein the Domestic Industry was earning huge profits or selling its products at price above NIP.
- m) The trends of domestic and landed prices are reducing due to reduction in the prices of Yellow Phosphorus. The investigating authorities must make an appropriate assessment of the injury caused to the domestic industry by the other known factors.
- n) Price undercutting has no relevance in the present case as domestic industry has improved its performance and its sales realization is more than its Non-Injurious Price.
- o) Capital employed comprises of net worth and debt of the company. Calculation of return by adopting 22% uniformly on both the components of capital employed is totally incorrect.
- p) PCPL's technology is obsolete and they suffered losses on investments in South America.
- q) The fact that a company with the capital employed of Rs.25 lacs only can manufacture 3000 tons of material shows that producing PUC does not require much capital and superior technology.

- r) Very basic technology of oxidation reaction is required for the production of P_2O_5 . The so called 30% value addition could be on account of expensive liquid oxygen, high manufacturing cost due to old technology and high packing cost.
- s) Raw material cost itself is expensive by US\$335 – 350 per MT.
- t) Liquid oxygen is more expensive than cost of compressing oxygen from air by US\$ 95-110 per MT.
- u) P_2O_5 is taking part in the reaction and dilute phosphoric acid comes out as a by-product. P_2O_5 is used in cyclisation process hence in this process, value of P_2O_5 is being consumed to give finished product is very high. For e.g. finished P_2O_5 is Rs.117 per KG while spend phosphoric acid would be less than Rs.10 Kg (depending upon the concentration of the acid) so this value utilization is counted part of finished product.

F.3 Examination by the Authority

44. The Authority notes the arguments of the domestic industry and other interested parties and various issues raised therein and has addressed them in the relevant paragraphs hereunder.

45. With regard to the contention of the interested parties that imposition of anti-dumping duty would lead to monopolistic conditions in the market, it is noted that supply of imports at fair prices is not restricted in any way by the imposition of anti-dumping duty. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the subject goods to the consumers.

46. With regard to the contention that the petitioner has not made any claim regarding expansion of capacity, the Authority notes that while the petitioner has provided some information about their expansion plans and the roadmap for its implementation, this issue is not relevant for the current investigation.

47. With regard to the contention of differences in technology, it is noted that the technology used by the petitioner is comparable to that of Chinese manufacturers. As regards the submission of the interested parties on provision of return on capital employed at 22%, the Authority notes that it has been the consistent practice of the Authority to provide return on capital employed at 22% and the same has been followed in this case also.

48. As regards the submission that advanced technology is being followed in China for manufacture of the subject goods, the Authority notes that none of the parties has provided any verifiable evidence to that effect. The Authority holds that the main raw materials required for production of the subject goods is Yellow phosphorous and oxygen. While oxygen is directly extracted from the air by the producers from China, the same is purchased by the domestic industry at competitive rates. The costing information filed by the petitioner does not show that the costs on account of air can be so different as to enable the Chinese producers to sell the product at such low prices. In fact, in case of petitioner, the cost on account of oxygen is only 4% of total costs. In any case, possible difference in production process in no way affects the right of the domestic industry to seek protection against the unfair trade practice of dumping being resorted to by the Chinese producers/exporters. The Authority has worked out the NIP as per antidumping rules based on the cost data/information verified from the records maintained by the domestic industry.

49. As regards the submission of interested parties about the need for protecting meager investment of Rs.25 lakhs made by domestic industry, the Authority notes that paid up share capital is not an indicator of the actual investment in a company. This matter is not relevant for the investigation and the Authority holds that the level of investment made by the domestic industry is not a criterion for recommending or otherwise imposition of anti-dumping duty.

50. As regards the submission that the investigation should be terminated when NSR exceeds NIP, the Authority notes that the purpose of calculating NIP is primarily to compute injury margin, i.e., use of the calculated NIP is not to conclude on injury. However, if the NIP calculated is significantly and consistently lower than the net sales realization during the injury period, it could indicate, when read with other elements of the investigation that the injury is not significant. The Authority notes that previously decisions of both kinds, i.e., on imposing anti-dumping duty when the NSR is more than the NIP and *vice versa* have been taken after taking all relevant factors into consideration holistically.

51. The analysis here in below *ipso facto* addresses various other issues raised by the interested parties.

F.4 Examination of Injury and Causal Link

52. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority has considered relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules.

F.4.1 Assessment of Demand and Market Share

53. The Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so

assessed is given in the table below.

Demand	UOM	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Imports from China	MT	3,143	2,995	2,906	3,367
Imports from Other Countries	MT	0	0	0	0
Sales of domestic industry	MT	616	1,404	1,286	1,181
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>228</i>	<i>209</i>	<i>192</i>
Demand	MT	3,759	4,398	4,192	4,548
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>117</i>	<i>112</i>	<i>121</i>
Market Share	%				
Imports – China	%	83.60%	68.08%	69.31%	74.04%
Imports – Other countries	%	0.00%	0.00%	0.00%	0.00%
Domestic industry	%	16.40%	31.92%	30.69%	25.96%

54. The Authority notes that the demand of the product under consideration has increased over the period. Though there was a slight decline in demand of the subject goods in 2015-16, it increased by 21% in the POI as compared to the base year. It is also noted that the subject imports command major share in the Indian market throughout the injury period.

F.4.2 Volume and Price Effects of Dumped Imports on the Domestic industry

(a) Volume Effect: Import volumes and share of subject country:

55. With regard to volume of the dumped imports, the Authority has examined whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The volume of imports of the subject goods from the subject country have been analyzed as under:

Import Volume	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
China	MT	3,143	2,995	2,906	3,367
Other Countries	MT	0	0	0	0
Total Imports	MT	3,143	2,995	2,906	3,367
Total Imports	%	100%	100%	100%	100%
Demand	MT	3,759	4,398	4,192	4,548
Production	MT	***	***	***	***
Demand	%	84%	68%	69%	74%
Production	%	267%	150%	157%	196%

56. The Authority notes that imports from China declined up to 2015-16 and then increased by 16% in the POI even when demand for the PUC increased only by 8%. Imports in the POI show increase whether compared to base year or preceding year. There were no imports from any other country throughout the injury period. It is observed that the subject imports are significantly high in absolute as well as relative terms in the injury period and the POI and despite significant unutilized capacities with the domestic industry.

(b) Price Effect of the Dumped imports and impact on the Domestic Industry

57. With regard to the impact of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. Accordingly, the impact on the prices of the domestic industry on account of dumped imports of the subject goods from the subject country have been examined with

reference to price undercutting, price suppression/ price depression and price underselling, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed price of imports from subject country.

(i) **Price undercutting**

58. Price undercutting has been determined by comparing the landed value of imports from the subject country with the net sales realization of the subject goods sold by the domestic industry in India.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Net Sales Realization	Rs./MT	***	***	***	***
Landed Price	Rs./MT	110,080	109,252	104,073	100,693
Price Undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	Range	10-20%	10-20%	10-20%	20-30%

59. It is seen that the imports from China are significantly undercutting the domestic prices in the injury period and the POI. The extent of undercutting increased significantly over the injury period. Whereas the NSR of the domestic industry remained in similar region between POI and 2013-14, the landed price of imports declined by about 9% over the injury period.

(ii) **Price Suppression/Depression effects of dumped imports**

60. In order to determine whether the effect of the dumped imports was to suppress or depress the prices of the like article in India, or prevent price increases which would have otherwise occurred, the Authority notes the changes in costs and prices of the domestic industry as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	92	94	98
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	99	97	100
Landed Price	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	99	95	91

61. Comparison of cost of sales with the selling price of the domestic industry shows that both the cost of sales and selling price declined in 2014-15. Whereas, cost of sales increased in 2015-16 and the POI, the selling price further declined in 2015-16 and then increased in the POI. The landed price of imports has remained below the cost of sales of the domestic industry throughout the injury period and the POI. Whereas the cost of production declined only by about 2%, the import prices declined by about 9%.

(iii) **Price underselling effect of the dumped imports**

62. For examining the price underselling effects of the dumped imports, the landed value of imports has been compared with the non-injurious price determined. The analysis shows that during the POI, the landed value of subject imports was materially below the non-injurious price of the domestic industry as can be seen from the table below:

Particulars	Rs./MT
Non-Injurious price	***
Landed Value	***
Injury Margin	***

Injury Margin %	***
Injury Margin (Range)	10-20%

(c) **Conclusion on Volume and Price Effect of Dumped Imports**

63. It is seen that there has been a significant increase in the volume of subject imports in absolute terms as well as in relation to production or consumption in India. Further, subject imports are undercutting and underselling the domestic prices and the effect of the subject imports is to cause suppressing and depressing effect on the prices of the domestic industry in the market.

F.4.2 Examination of economic parameters relating to the domestic industry:

64. Annexure II to the Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth and ability to raise capital investments.

65. Accordingly, various economic parameters of the domestic industry are analyzed herein below:

(a) **Actual and potential impact on capacity, production, capacity utilization and sales**

66. The table below shows the capacity, production, capacity utilization and sales of the domestic industry for the product under consideration during the injury investigation period.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Capacity	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	100	100	100
Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	170	158	146
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	170	158	146
Domestic Sales	MT	616	1,404	1,286	1,181
<i>Trend</i>		100	228	209	192
Demand	MT	3,759	4,398	4,192	4,548
<i>Trend</i>		100	117	112	121

67. It is seen that production and domestic sales of the domestic industry increased in 2014-15, but declined thereafter significantly in 2015-16 and further then in POI. The petitioner suffered 14% loss of production in POI and 16% loss of sales compared to 2014-15. Petitioner contended that having achieved a production and sales level in 2014-15, and considering that the demand for the PUC did not decline thereafter, there is no reason, but for dumping, why the same should have declined so materially thereafter. It is also noted that capacity utilization of the domestic industry is much below the achievable levels in spite of significant demand in the country.

(b) **Market Share of Domestic industry in Demand**

68. The effects of the subject imports on the market share of the domestic industry have been examined as below. It is noted that the market share of the domestic industry has remained low throughout the injury investigation period and the POI. Further, after decent increase in market share in 2014-15, the same declined in 2015-16 and the POI.

Market share in Demand	UOM	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Domestic industry	%	16.40%	31.92%	30.69%	25.96%
Imports from China	%	83.60%	68.08%	69.31%	74.04%
Total	%	100%	100%	100%	100%

(c) **Actual and potential impact on profit/loss, cash flow, return on capital employed**

69. Performance of the domestic industry with respect to the profitability parameters are as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	92	94	98
Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	99	97	100
Profit / Loss	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		(100)	1,010	482	227
Profit / Loss	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>		(100)	2,299	1,005	434
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	3,373	1,672	952
PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	55,367	25,320	12,836
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>		100	19,663	7,962	3,586

70. It is seen that profit, cash profit and return on investment increased up to 2014-15. Performance of the domestic industry in respect of these parameters declined thereafter in 2015-16 and the POI. The domestic industry was suffering losses in 2013-14 when its capacity utilization was low. However, as demand increased in 2014-15 and imports declined, the domestic industry was able to come out of losses and earn profits. However, with the significant increase in imports in POI, the profits earned by the domestic industry declined significantly.

(d) **Actual and potential impact on Employment, Wages and Productivity**

71. The data on employment and wages given below indicates increase in employment up to 2015-16 and then declined in the POI. Wages have increased over the injury period and the POI. The information below shows that the productivity has increased in 2014-15 and then declined in tune with the level of production.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI-A
Employment	No	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	123	186	154
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	170	295	291
Productivity per day	MT	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>170</i>	<i>158</i>	<i>146</i>
Productivity per Employee	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>138</i>	<i>85</i>	<i>95</i>

(e) Actual and potential impact on Inventories

72. Information regarding inventory can be seen from the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Average Inventory	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>		<i>100</i>	<i>42</i>	<i>25</i>	<i>88</i>

73. The average inventory with the domestic industry declined up to 2015-16 and then increased in the POI.

(f) Actual and potential impact on ability to raise fresh Investment

74. The Authority notes that the domestic industry has not been able to fully utilize the production capacity for the product under consideration. Further, sharp decline in profitability of the product under consideration in the POI is likely to affect the expansion being undertaken by the domestic industry.

(g) Actual and potential impact on growth

75. The Authority notes that the overall analysis of the performance of the domestic industry shows that the domestic industry has faced negative growth in POI in terms of volume as well as price parameters, such as, sales, production, capacity utilization, market share, profits and return on investment. Considering the decline in growth in these parameters during the POI, the potential impact of the dumped imports on these parameters could be significantly negative.

Particulars	UOM	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Production	%	-	69.78	(7.16)	(7.37)
Domestic Sales Volume	%	-	127.74	(8.36)	(8.21)
Cost of Sales	%	-	(8.33)	2.14	4.21
Selling Price	%	-	(1.06)	(1.53)	2.35
Profit/ Loss per unit	%	-	(1,109.59)	(52.30)	(52.90)
Return on Investment	%	-	34.55%	-20.67%	-7.73%
Capacity Utilization	%	-	27.35%	-4.76%	-4.56%
Market Share	%	-	15.52%	-1.23%	-4.72%

(h) Magnitude of Dumping and Dumping Margin

76. The dumping margin determined in respect of the subject imports is significantly above *de minimis* level.

(i) Factors affecting prices

77. Examination of trends in the volume and prices of the dumped imports from the subject country, and the domestic prices indicate that the presence of significant volume of dumped imports from the subject country have affected the prices of the domestic industry resulting in deterioration of profits to the domestic industry.

(j) Conclusion on Injury

78. The verified information relating to the injury to the domestic industry and analysis indicates that while the performance of the domestic industry had improved in 2014-15, the performance of the domestic industry in respect of various vital economic parameters such as production, sales, capacity utilization, market share, profits, cash profits

and return on investments has deteriorated thereafter significantly and consistently up to POI. Imports from China increased and were undercutting the prices of the domestic industry in the market. Imports were causing significant underselling effect on the domestic industry's selling prices. The injury suffered by the domestic industry is not only significant but also material.

G. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

79. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry when compared with the landed value of the exports from the subject country shows positive injury margin during POI.

Injury Margin

Producer	Exporter	Non-injurious Price US\$ / MT	Landed Price US\$ / MT	Injury Margin US\$ / MT	Injury Margin %	Injury Margin Range%
M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Quishuyan)	M/s Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Quishuyan)	***	***	***	***	5-15%
*Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.	*Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.	***	***	***	***	10-20%
All Others		***	***	***	***	25-35%

**Earlier known as M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.*

H. CAUSAL LINK AND OTHER FACTORS

80. As per the AD Rules, the Authority, *inter alia*, is required to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors may not be attributed to the dumped imports.

81. It was examined whether the following other factors listed under the AD Rules could have contributed to the injury suffered by the domestic industry.

(i) Volume and prices of imports from other sources

82. Examination of import data shows that there are no imports of product under consideration from other countries. Therefore, the imports from other sources have not caused injury to the domestic industry.

(ii) Contraction in demand and/or change in pattern of consumption

83. Demand for the product in the domestic market has shown increase over the injury period. Therefore, the demand for the subject goods has not caused any injury to the domestic industry.

(iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

84. The investigation has not shown that conditions of competition or trade restrictive practices are responsible for the alleged injury to the domestic industry.

(iv) Development in technology

85. The investigation carried out does not show any significant change in technology which could have affected the performance of the domestic industry.

(v) Export performance of the domestic industry

86. Petitioner has exported the product under consideration during the injury period. However, the claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations and the injury analysis in the previous section is based on the performance of the domestic industry in respect of its domestic sales. Prices and profitability in the domestic and export markets have been segregated by the Authority for the purpose of assessing injury to the domestic industry in the domestic market.

(vi) Productivity of the Domestic Industry

87. The productivity of the domestic industry has declined due to the decline in production.

H.1 Factors establishing causal link

88. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has deteriorated due to dumped imports from the subject country. Causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- a) Imports have undercut the prices of the domestic industry. The volume of imports increased over the injury period.
- b) The presence of dumped imports in the country had depressed the prices of the domestic industry.
- c) The subject imports were underselling the product sold by the domestic industry.
- d) Deterioration in profits, return on capital employed and cash profits is a direct consequence of dumped imports.
- e) As a result of significant price undercutting; production, sales and capacity utilisation of the domestic industry has not increased in proportion to increase in demand.
- f) The growth of the domestic industry in POI became negative in terms of a number of price and volume related economic parameters.

I. POST DISCLOSURE COMMENTS

89. The post disclosure submissions have been received from the interested parties. The issues raised therein have already been raised earlier during the investigation and also addressed in relevant paras. However, for the sake of clarity, the submissions by the interested parties are being examined as below:

I.1 Submissions made by the domestic industry

90. The domestic industry has made the following submissions:

- a) P2O5 produced by the domestic industry is like article to the imported product.
- b) The petitioner is an eligible domestic industry.
- c) Imposition of export duty on yellow phosphorus by China is to promote its value added products. Even if the raw material price is discounted by the quantum of export duty (which is not a requirement), the data would show significant dumping. This should not be encouraged by permitting dumping.
- d) Significant value addition to the extent of 30% is required on Yellow Phosphorus to convert into P2O5 due to the hazardous nature of raw material and finished product, its handling, packing and transportation also requiring extreme caution.
- e) There is no significant difference in cost of production on account of difference in the method of oxygen procured and used in the process by Chinese exporters and the domestic industry.
- f) The Chinese exporters would incur two-way freight on tankers on account of transportation of yellow phosphorus as against cost of drums used by the domestic industry.
- g) Denial of protection to the domestic industry of yellow phosphorus in the past led to complete stoppage of production of yellow phosphorus in the country.
- h) Domestic industry has suffered material injury caused by dumped imports as the volume and market share of dumped imports was so high that the domestic industry could not sell, produce and utilize its existing capacity in spite of demand in the country.
- i) Dumped imports undercut the domestic prices and created price pressure in the domestic market leading to decline in profits, cash profits and return on investment.
- j) Dumped imports have resulted in significant price underselling.
- k) Dumping margin and injury margin in respect of each of the responding as well as non-responding exporters from the subject country is significantly positive.
- l) Comparison of NIP with NSR should be at same level, that is, all the expenses which have been disallowed in NIP, should be deducted from NSR.
- m) Imposition of antidumping duty will not have any significant impact on user industries.
- n) The petitioner has made significant investment and has even planned to expand the production capacity of the subject goods.
- o) Since the prices of yellow phosphorus are fluctuating, anti-dumping duties expressed in US\$ terms and in fixed form or ad valorem form need to be recommended.

I.2 Submissions by other interested parties

91. The submissions of various opposing interested parties are summarized as follows:

- a) Price undercutting and price underselling are inconsistent. This shows that net sales realization of the domestic industry is higher than the non-injurious price and the domestic industry is not facing any injury.
- b) The consistent practice of the Authority to consider 22% return on capital employed is without any logic and cannot be termed reasonable, whereas the law required reasonable return on capital. Reference to CESTAT rulings in the cases of Bridge Stone Tyre Manufacturing & others vs. DA and Hyosung Corporation vs. DA.
- c) The practice followed by EU in determination of reasonable return is based on target profit, which is the profit margin obtained by the domestic industry in the period in which dumped and/ or subsidized imports did not have any negative effect. Reference to T-210/95 European Fertilizer Manufacturer's Association (EFMA) v Council [1999] ECR II-3291.
- d) Raw material effect has not been considered by the Authority. India has higher raw material cost than China on account of yellow phosphorus import price. There is 20% export duty from China. Vietnam and Kazakhstan adjust their rates accordingly.
- e) India also incurs additional cost on account of transportation (ocean freight) and packing of yellow phosphorus as there is no producer of yellow phosphorus in India, which makes Indian P2O5 more expensive than Chinese P2O5.
- f) There is no dumping causing injury to the domestic industry. Application of anti-dumping measures is inconsistent with the long-term and overall interests of Indian domestic and downstream industries.
- g) As there is no injury to the domestic industry, the Authority should not apply anti-dumping measures. In case the Authority feels imposing anti-dumping duty, the Authority may consider fixing up reference price as mode of anti-dumping duty.

I.3 Examination by the Authority

92. It is noted that the issues raised at post disclosure stage have already been examined by the Authority in above relevant paragraphs, however for the sake of the clarity of the submissions they are addressed as below:

- a) With regard to the contention of interested parties that net sales realization of the domestic industry is higher than the non-injurious price and the domestic industry is not facing any injury, the Authority has made determination of injury after conducting complete verification of the costing information and claims of injury.
- b) With regard to the submission of the interested parties on provision of return on capital employed at 22%, the Authority notes that it has been the consistent practice of the Authority to provide return on capital employed at 22% and the same has been followed in this case also.
- c) With regard to the contention of interested parties that raw material effect has not been considered by the Authority, it is to be noted here that the Non-injurious Price (NIP) is based on the cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-dumping Rules. Cost of production in the exporting member country is immaterial for calculation of non-injurious price and injury suffered by the domestic industry.
- d) With regard to the contention by the domestic industry that the Chinese exporters incur two-way freight cost on tankers on account of transportation of yellow phosphorus as against cost of drums used by the domestic industry, the Authority notes that this issue is not relevant as the Authority has rejected the responding exporters' claim for normal value and adopted constructed cost method for calculation of normal value. Further, as regards the cost incurred by the domestic industry for transportation of yellow phosphorus, the same has been verified as per the books of accounts and taken into consideration for the calculation of non-injurious price.

J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

93. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping duties, therefore, would

not affect the availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

K. CONCLUSION AND RECOMMENDATION

94. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that:

- a) The product under consideration has been exported to India from the subject country below the normal value.
- b) The domestic industry has suffered material injury on account of dumped imports from the subject country.

95. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all the interested parties. Adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Anti-Dumping Rules and having established positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of anti-dumping duty is necessary to offset dumping and injury.

96. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the 'margin of dumping' and 'margin of injury', so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, for a period of five (5) years from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, as the difference between the landed value of the subject goods and the amount indicated in Col 8 of the duty table appended below, provided the landed value is less than the value indicated in Col 8.

DUTY TABLE

SN	Subheading/ Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount US\$/ MT
1	2	3	4	5	6	7	8
1	*28091000	Phosphorus Pentoxide	China PR	China PR	Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Quishuyan)	Changzhou City Qishuyan Fine Chemicals Co. Ltd. (Quishuyan)	1685.42
2	28091000	Phosphorus Pentoxide	China PR	China PR	**Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.	** Anhui Longhua Chemical Industry Company Ltd.	1685.42
3	28091000	Phosphorus Pentoxide	China PR	China PR	Any other than (1) and (2) above		1685.42
4	28091000	Phosphorus Pentoxide	China PR	China PR	Any	China	1685.42
5	28091000	Phosphorus Pentoxide	China PR	China PR	China	Any	1685.42

* The customs classification is indicative only and not binding on the scope of this investigation.

** Earlier known as M/s Chizhou Longhua Pharmachem Co. Ltd.

97. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

L. Further Procedure

98. An appeal against the order of the Central Government arising out of this Final Findings Notification shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Designated Authority